लिला: लेतहैं ॥ गेंदवडी श्री चंद्रावली जी के कुच ॥ मनो लीगें
२५१ द्श्री स्वामिनी जी के कुच ॥ हय वेंगी सात्वकी भक्त दे
न्यहोइ जिस्यें करि विनती करतहैं जो हम तुम्हारे हैं
॥ झुनझुना दोहाेरो सो नकनके करके आभूषनके
फोंदना है ॥ कंकन आदि इकहर झुनझुना है ॥ सो व्रज
भक्तनके हस्तकी चुटकी है आभूषन वाजत हैं ॥ औ
र खिलौनानकी तबकडी दोइ ॥ तामें एक में हाथी घो
रा ऊंट कुत्ता वाघ सिंघ हिरन रोंझ इत्यादिक महा
यानकरूप पुलिंन कनके संग प्रभु खी लाकरें तहां
मर्यादा भक्त नंदादिक अनेक गोप तें आसुरा सकती
ताविरोधी को भयानक है ॥ और जो ताके वधी कोर
सात्मक सुषरूप है ॥ एक तबकडी में ॥ सुवसैना इ
न कबूतर बतक कुही आदि पंषी है ॥ सो श्री स्वामि
नी जी के निकुंजसंबंधी है ॥ सुंदर मधुर बचन सुनि
कै कुंजमें संकेत को सूचनदा अनुसरूपकों होतहै ॥ को
मोंदी पनसों मिश्री है ॥ जबइनको सुंदर सुंदर अबन

में परतहै ॥ तब विहारको उत्कंठा होत है ॥ एक तबकडी
में जलके जीव है ॥ मगर मछली कछवा चकई चकवा बगु
ला सारस हंस पनडुबी इनके देखे तें विहार जल तथा
श्री यमुनाजी के तीर पुलिनको विहार लीला को रसउ
दै पन होत है ॥ या प्रकार खिलौनांनामो तिनमो तिनके जल
षषलीला संबंधी है ॥ पालनां झुलावनो सो विहार है
॥ पालनां के कीर्तन गावत है ॥ तथा गूढ भाव सों अति
रसा कुमारिका रस रूप जो ताको गान करत है ॥ पाछें
राजभोग को समय जो तिन प्रभु को सिंघासन पर पध
राईये ॥ तथा रसोई घर में प्रभु को सांगामाची पर पध
राइ लैजेये ॥ ताको भाव यह है ॥ सिंहासन आगे भोग आ
वै तहां प्रभु के भक्त आवत है ॥ तहां प्रभु आधीन लीला है
॥ तहां भक्त आइके भगवद्रस को अनुभव करत हैं ॥ री
तको रमन यह भाव विचारनो ॥ जहां रसोई घर में प्रभु
आपु पधारि राजभोग आरोगत है ॥ तहां भक्ताधीन ली
ला है ॥ तहां भक्तनके रसको प्रभु अनुभव करत है ॥ तहां

तिना छिपरीतरमनकों विचारनों ॥ राजभोगमें प्रथम धूप
२५२ करनो ताको भाव यह ॥ प्रसिद्ध प्रभुके आरोगतमें
काहू ठारको दुरगंध न आवै ॥ मुख्यभाव यह है ॥ श्रीस्वा
मिनीजीके मुषारविंदको सौरभ दसौं सो दिसामें फै
लत है ॥ ताकरि प्रभुको मन रमणादिक जो तामें
आतुर होत है ॥ तापीछें दीप है सो ऊपर यह भाव है
सो मिश्री परकाहूंकी दृष्टि परी होइ तो दृष्टिदोष
दीपतें निवर्त होइ ॥ सो सोरह हजार अग्निकुमारि
काके हृदयमें विरह है ॥ सो प्रभुके ऊपर न्योछावरि
करत हैं अपने मनोर्थ सिद्धि होनार्थकों तुलसी धा
रत हैं जो सो मिश्री कोई अन्यसंबंधी धुपाई होइ
बजारसों मंगाइक सो क अन्यमार्गीयको पायो होइ
॥ सो अन्यसंबंधस कछू रहि होइ ॥ तुलसी है सो पति
व्रता है ॥ अन्यसंबंध होन न देइ ॥ मुख्यभाव यह है ॥
प्रियांगसंग तुलसी मुरली चरण प्रियां श्री स्वामिनी
जीको संबंध तासों मिश्री को भयो सो भगवद्भोग्य जो

ग्य भई ॥ तातें तुलसी आवश्यक समर्पिये ॥ पीछें सं
षोदिक करें संषजलको आधिदैविक है ॥ तातें संष
जल छिरकतें अमृतमय सो मिश्री होइ अथवा सं
षकी नांही श्री स्वामिनीजीको कंठतो नीरे घासंयुक्त
है ॥ तामें जलस्वरूप श्री स्वामिनीजीको अधरामृत है
॥ ताके संबंधतें प्रभु अत्यंत प्रीति पूर्वक आरोगें
॥ याभावतें धूप दीप तुलसी संषोदिक करनो ॥ अ
थवा धूप श्री स्वामिनीजी ॥ दीप अग्निरूपा श्री चं
द्रावलीजीके हृदयको विरह न्योंछावरि ॥ तुलसी
सोरह हजार कुमारिका है तिनकों पतिभाव है ॥ ता
तें प्रबोधनीके दिन तुलसीके व्याह मिस कुमारि
काको व्याह सषी जननें कियो है ॥ याभावतें ॥ संषो
दिक श्री यमुनाजी ॥ इत्यादि विचारो जु पपतिनके
भावते हैं ॥ श्री ठाकुरजीको राजभोग धरत है ॥ सो मि
श्री को भाव उत्सव आदिमें कहे है ॥ तातें इहां
फेरि नांही कहे ॥ राजभोगमें श्री यसोदाजीके घर

लिला की सांमिग्री तथा आछनाई उपनंद हैं तिन हूं के घ
२५३ रकी सांमिग्री अरु तिलूपा श्री चंद्रावलीजी के मनो
र्थकी सांमिग्री है॥ श्री स्वांमिनी जी के मनोर्थकी सा
मग्री सार हह हजार कुमारिका श्री नंदराय जी के घ
रहें सो सगरी सेवा श्री ठाकुरजी की करत हैं॥ श्री यसो
दाजी के मनोर्थ की सांमिग्री बागा धरावत हैं अपने
मनोर्थ की सांमिग्री ~~बागा धरावत हैं~~ त्यारि करि अरो
गावत हैं॥ बागा आदि भूषन सर्व मनोर्थ करत हैं श्री
यमुनाजी सब में मिलि हैं॥ नंदालय में हू सगरी स्वा
मिनी के भाव में हैं॥ तथा वृषभांनजी आदि गोपन के
घर जो जन करन को पधारत हैं॥ तथा गुप्त प्रकार भाव
ते व्रज भक्तन के घर चोरि के मिस आरोगत हैं॥ तथा
निकुंज में श्री स्वामिनी जी श्री ठाकुरजी सदा एक रस
बिराजत हैं तहां सब ही जन राजभोग धरत हैं॥ यह अ
निर्वचनीय है तथा वन में धाक श्री यसोदाजी पठा
वति है॥ सगरी व्रज की स्वामिनी हू पठावति हैं॥ तहां

आरोगत हैं॥ इत्यादिक नाव राजभोग के हैं॥ सो र
सिक जन जे पुष्टिमार्गी यहै तिनही के अनुभव
जोग्य है॥ इहां राजभोग आवे॥ रसोई कर्त्ता वासन
मांजे॥ रसोई पोते॥ सिंगार कर्त्ता जप पर्यंठ करें दोइ
घरी के भीतर॥ इतनो समय होइ॥ तब भोग सरावे का
ल ते सास्त्र में कहे हैं॥ दोय घरी उपरांत दुसरो महू
र्त सराकाल होइ है॥ सो पुष्टि मारग में बाधक नो
ही है॥ परंतु अपने कार्य के अर्थ अवेर न करे श्री
वल्लभकुल के सव्य श्री ठाकुरजी तथा श्री वल्लभ
कुल के दर्सन में घरी अवेर लगे तो चिंता नांही॥ पर
तु लोक मन में आर्त्ति राखे॥ जो किक वैदिक के लिये
कबहू ढील न करनी॥ और उतावल हू नांही करनी
यह सर्वोपर सेवा है॥ परंतु लोक में जीव को अनेक
कार्य आइ परत है॥ तहां ढील नांही करनी वेगि करें
तो चिंता नांही प्रभु की सेवा अर्थ अवेर न होइ॥ फ
लमंडली बांधते सांमिग्री करते चिंता नांही॥ सेक

लिप्त्राः मनमें आर्त्तिकरिवेगिकरजो प्रथम आचवनकरा
२५४ इमुषवस्त्रकरिवीरी आरोगाईये ॥ पाछें चोरी उठ
इ थोइमंदिरबस्त्रदेंचरनारविंद परतु जसो समर्पिए
माला पहिराईए ॥ पंखा सिज्यापें दिवारी तांई ॥ सिंहा
सनपें विजेंदसामी तांई ॥ सिज्यानोगवीडी मालासा
री धरीए ॥ सिंहासनपर प्रभुके दोऊ दिसा तकिया धरि
ए ॥ सोभ तनके दोऊ भुजारूपहें प्रथवा श्री स्वामि
नीजी के भावतें ॥ वामभाग श्री चंद्रावली जीके भावतें
हें ॥ दछिनभाग दिसाके तकीया पर मुषवस्त्र ॥ श्रीस्वा
मिनीजीको अंचल श्री चंद्रावलीजी हस्तपें लीयें ठा
ढी हें ॥ ठाढे सरूप होइ तो वेनु श्री हस्तमें धराइ वेत्र
गाइ करसों ठाढ़ो करियें पाछें सिंहासनसों लगाइ पा
ड मांडियें ॥ तामें सिढी ती नती नो स्वामिनीके भाव
तें श्री चंद्रावलीजी गोप्य भार्या हें … न्याकरि पाछें
नडी हें ॥ बीचकी सिढी कुं मालिकावालकहें ॥ प्रभुके
निकटकी सिढी श्री यमुनाजी ॥ तीनों पंडपर गादी

रूईकी बिछाईये ॥ सो तीनोंनचके हृदयरूपगुनहे
गादी श्री स्वामिनीजी के हृदयरूप हें ॥ षंड पर चारि
खिलोनाकी लवकडी धरिये ॥ दोइ वाम ओर ॥ दोइ द
छिन ओर वाम ओर श्री स्वामिनीजी ओर कुमारि
काके भावतें ॥ दछिन ओर श्रुतिरूपा श्री चंद्रावली
जी श्री यमुनाजीके भावतें ॥ वेनुरूप श्री स्वामिनी
जी ॥ वेत्ररूप श्री चंद्रावलीजी श्री नवनित प्रिय
जीके पास वेत्र नांही हें ॥ सो ऊपर भाव कहि आए हें
निरावरन सरूपमें मर्यादाको दूरि किये ॥ पाछें षं
ड सों लगाइके पाट बिछाईये ॥ तापर रूईकी षोल
तापर श्रुपेद बस्त्र वर्षा रितुमें रंगीन वस्त्र ॥ पाटल
ललितादिक सषीको भाव हे तापर रूईकी षोलसों श्री
स्वामिनीजीको हृदयरूप हें तथा ललितादिकको हृद
यरूप हें ॥ तापर दोऊ दिस गादी हें ॥ वामभाग श्री स्वा
मिनीजीकी ॥ दछिनभाग श्री ठाकुरजीके बैठिवेकी
श्री स्वामिनीजी बेठे ॥ तागादीमें श्री ठाकुरजीके

निमा॰ हृदयकौ भाव जागादी पर श्री ठाकुरजी वेठे तामें श्री
२५५ स्वांमिनीजी के हृदयकौ भावहै॥ ताके बीचो बिचचौ
पडिमां डिये काठकी हाथी दांतकी रूपेकी तथा सो
नेकी॥ सो नेकी श्री स्वांमिनीजी के भावतें रूपेकी श्री
चंद्रावलीजीके भावतें॥ हाथी दंतकी श्री यमुनाजी
के भावतेहे॥ काष्टकी श्री अग्निकुमारिकाके भावतेहैं
॥ याही प्रकार सतरंज॥ तथा बाधबकरीमें चारो जू
थपतिको भाव बिचारनो॥ तामें गोट सोरह है॥ ता
में चारि चारि एकएक घरमें रहे हैं॥ सो चारोके घरहै॥
सो न्यारे न्यारे कुंज हैं॥ चार चार यातें हैं॥ राजसी ता
मसी सात्वकी॥ रसउद्दीपन अर्थ एकत्रि कुंज॥ या
भाति चारो॥ जूथपतिमें रसरूप गुनादिक जो जिये
अपनौ किक चारोकें न्यारे न्यारे सो चारोके वस्त्रके॥
भाव बिचारीये॥ पोरे श्री स्वांमिनीजीके भावतेहै॥
स्यांम श्री यमुनाजीके भावतेहैं॥ लाल श्री चंद्राव
लीजीके भावतेहैं॥ हरे अग्निकुमारिकाके भावतें

एकएक घरमें चोबीस चोबीस कोठाहैं॥ सो द्वादस
~~भक्त~~ अंग भक्तके हैं॥ द्वादस अंग प्रभुके॥ तथा चोबी
स निकुंजमें रिसरसरूप सुंदर घर हैं॥ या प्रकारको
ठ छांनवेहे॥ तामें चोरासी आसन कामसास्त्रोक्त
हे॥ द्वादस महीनां करि नित्य जो जाको सूचनकर
तेहे॥ वहूतेर महीनां होतहैं॥ सो छांनवें घर
चोरा आरबीचमें घर एकसो अधिक महीनांको
भावहे॥ याप्रकार सदांजो जासमनहें अप्पवाबीच
कौघरहे॥ सो नंदालयहै॥ तहां श्री नंद यसोदाजी
श्री ठाकुरजी सहित विराजतहैं॥ तातें यो चकोघ
खडोहैं॥ चारों ओर ब्रजभक्तनके निकुंजहैं॥ इत्या
दिक भावतें चोरासी कोसके चोरासी कोठाहैं॥ सो
ब्रजवारी द्वादस वर्षताईं श्रीजी ब्रजमें रहे स्य
विचारीये॥ तातें या रस वरसतें वारहमें प्रभुमधु
रापधारे॥ तातें द्वादसवर्षके जी लरकी सरूपकी
भावनाकरें॥ तामें बालभाव पौगंड किसोर सब आइग

लिनाए ॥ गोवर्द्धनउठाए ता दिनतें किसोरश्री जी के ध्यानिवु
२५६ जनजो ताहें सातोसरूपमें नंदालयकी बालकलीला
आदि यहभावतहें ॥ चोपरके घर आनवें तहां पासा
सी नहें ॥ सो राजसी तांमसी सातुकी भावदोउकों लो
जा करतहोतहें ॥ जब प्रभु पासा घोलें ॥ तबरीतकोरम
णहें ॥ जबभक्त पासा डारे ॥ तब विपरीतकों रमनहें ॥ ता
में कबहूं भक्तकों तांमसहोइ ॥ तब प्रभु सातुकहोइ क
बहूंक प्रभुकों जो जा करतमें तांमसहोइ ॥ तब भक्तसा
तुक भावकों धारनकरें ॥ कबहूं राजसहोइ तबदोउस
रूपकों संगही होइ ॥ जाना रितुकी भाग [illegible]
आभक्तकरे ॥ जोई प्रभुकरें ॥ सोई भक्त [illegible] सात [illegible] तो
गुनसंयुक्त जो जाहोइ ॥ तातें पासा तीन [illegible] ॥ एव
क पासामें चोदहचोदह आंकहें ॥ सो चौदह विद्यासं
पूर्णहें चारोभक्तहें ॥ श्री यमुनाजी सबमें दोइपासा
में श्री ठाकुरजी श्री स्वांमिनी जी ~~श्री स्वांमिनी जी~~ जु
गलसरूपहें ॥ तीसरे पासामें सगरे व्रजकी स्वांमि

नीजी आइगई ॥ तीनो पासामें आंक वियालीस भ
ए ॥ ४२ ॥ चोराविद्या ॥ १४ ॥ अघोराविद्या ॥ १४ ॥ घोरा
घोराविद्या ॥ १४ ॥ धर्मे ६ ॥ पासाएकमें ॥ १ ॥ चतुर्थज
य प्रभु ॥ ५ ॥ जुगलसरूप २ दोउ मिलिकें एकभए
ताको यहभावहें ॥ सोरहकला श्री ठाकुरजी सोरह
कला श्री स्वांमिनीजी ॥ दस प्रकारके भक्तहें ॥ इत्या
दिकभावतें चोपडि खेलतहें ॥ तहां कबहूं प्रभुहारतहें
कबहूं भक्त हारतहें ॥ प्रभुहारें तब भक्त विपरीतर
मणकरतहें ॥ जब भक्त हारें तब प्रभुरीतकोरम
ण करतहें ॥ याप्रकार चोपडिको भाव गोप्यबहुत
हैं तातें उत्सवमें अन्यंगहोइ ॥ ता दिन आवस्य चो
पडि विधाईयें आठमें दिनसतरंजतथा वाघब
करी धरीयें चोपडि श्री स्वांमिनी जी के भावतें ॥ बाघ
बकरी सोरहहजार कुमारिकाके भावतें मनोर्थ कि
ए ॥ श्री यमुनाजी तीनो भक्तके मनोर्थकें भीतरहे
अब बाघबकरी को भाव कछू कहतहें ॥ बकरीसो

सिना: रह॥ वाघदोउ॥ तथा एक हे ताको भाव ~~पूछें कहत हें~~ प
२५७ हहे॥ कबहूं भक्त वाघसों विपरीत रमन भक्त आप
नेवस प्रभुको करत हे॥ प्रभु बकरी की नांई आज्ञा
अनुसार चलत हे॥ कबहूं श्रीठाकुरजी वाघ की ना
ई तब खेलको रमन करि भक्तन को प्रभु अपने बस
करत हैं॥ तब भक्त बकरी की नांई॥ जो जो श्रीठाकुर
जी कहत हें॥ सो सो भक्त करत हे॥ बकरी सोरह चार
चार जूथपतिके भावसें राजस तामस सात्विक नि
र्गुणरूपसों साडीचोपडिके भावमें कहि आगे॥ का
राके वाघदोयके भाव यह हें॥ एक श्रीठाकुरजीरू
प एक श्रीस्वामिनीजी को भाव हे॥ तथा श्रीचंद्रावली
जी और श्रीस्वामिनीजी दोउ वाघरूप हें॥ तथा प्रभु
बकरीरूप दोउ स्वामिनी के वस भए हें॥ ताते बांम
भाग श्रीस्वामिनीजी॥ दक्षिन भाग श्रीचंद्रावलीजी
हें॥ श्रीठाकुरजी को घेरि के बैठे हें या भावते दो
इ वाघ दोउ और धरत हें॥ एक वाघ धरे ताको

अभिप्राय यह हे॥ तहां मुख्य श्रीस्वामिनीजी को भा
व हे॥ दंपतिरस प्रभु बकरी श्रीस्वामिनीजी वाघ मां
नादिक प्रसंगसों विचारनो॥ कबहूं बकरी बीस हें॥
तहां चारो जूथपतिमें चार चार प्रकार की स्वामि
नीजी हें॥ तिनमें एक एक सखी तरंगनी हें॥ ताते पा
च पांच बकरी इकठी धरत हें घर चौसठि हें॥ ताते
चौसठि कला जो विद्या हें॥ एक एक स्वामिनी में सो
रह सोरह कलासं पूर्ण हें॥ ताते चौसठि विद्या नि
धान चतुर चौसठि कला हें तद पिलोरी यांपद
के अनुसार ते वाघ बकरी धरत हें और सतरंज
हे सो श्रीरूपा श्रीचंद्रावलीजी के भावते हें॥ त
हां परक्रिया भावतें राजसी भक्त के मनोरथ हें॥ ता
ते हाथी चार॥ घोडा चार॥ ऊंट चार रजो रहें॥ पा
ला हहें॥ पयादे सोरह॥ या प्रकार सगरे बतीस
हें॥ ३२॥ ताते भक्त के प्रभु के मिलिवे सोरह सोर
ह शृंगार॥ सो यातें जो राजसी भक्तको शृंगार बहु
त प्रिय हे॥ ताते आपहु आछो आरोगत हे॥ औ

नि जो र प्रभुको हू आछो अरो गावलहे आप हू आछो प
२५८ हिरे ॥ प्रभुको अछो पहिरावे ॥ तातें यह ससरंजनको खेल
राजानको है ॥ तातें वती सगोट है तामें हाथी चार करके
गजनवतजी जा पंच अध्याईमें कह्यो है ॥ गंधर्व पालि भि
लनद्रुत आविसह श्रांता गजो भिरिभंडारि विभिन्न
सेतु ॥ सो मस्यसं युवति भिपरि षिच्य ▪ मान ॥ प्रेमो
ल्लित प्रहसतो भिरत स्तलोभवै ॥ मानिके कुसुम वर्षभि
रो ड्य मानो रमे स्वयंस्वर ति रत्र गजेंद्र जी जा ॥ याप्रका
रको विहार तातें हाथी है ॥ चार हें सो चार प्रकारके भ
श्रु तिरूपामें है राजसी तामसी सात्विकी निर्गुण ॥ प्रथ
माचारी यूथपति श्री स्वामिनीजी के भाव ॥ घोडा
चार हें तामें यह भाव है भक्तरूप घोडा सो पर्वत वाँ
प्रकार श्री ठाकुरजी कोलै निकुंजमें जहां गुरजन गोप
कोई ॥ जाइ न सके उंट चार सो उंटकी पाँ करतसो है ॥ जा
कों पकरें ताको फेरि न छोडे ॥ तैसई श्री ठाकुरजी के अ
ग अंग चारा यूथपति श्री स्वामिनीजी ने पकरि राखे
हें ॥ अथवा उंट वहोत चलत हे ॥ तातें श्रुतिरूपा हे सो

गोपभायी हें ॥ अनेक प्रतिबंधरूप ग्रहस्त हें ॥ परंतु त
नमन धन करि सगरो श्री ठाकुरजीमें लगायो हे ॥ प
हृदयमें सर्वोपर मारीते न्यारीजी यो हे ॥ और उंट चलेव
हुत ॥ सो श्रुतिरूपा हू प्रभु संबंधके अर्थी हें ॥ दधिवेच
नके मिस वेनुनाद ॥ सुनत हो ॥ अनेक उपाय करित
सकाल श्री ठाकुरजी को आइके मिलत हे ॥ सो पंच
अध्याईमें कहे हें ॥ पति पुत्रादिक गृहकार्य छोडि वेनुना
द सुनत दौरि आई ॥ तातें उंट हें ॥ उजीर दोय हें पातसा
हके दोइ हें ॥ दोउ पातसाह सो जुगल स्वरूप श्री ठाकुरजी
श्री स्वामिनीजी हें ॥ दोउ उजीर सो दोउ सखी आज्ञा
कारि ललिता दोउ पातसाह नित्यसिद्धा श्री स्वामिनी
जी श्री यमुनाजी ॥ दोउ उजीर सो श्री चंद्रावलीजी श्री
र अरु एक कुमारिका श्री चंद्रावलीजी श्री स्वामिनीजी
सो प्रगटी हें ॥ तातें श्री स्वामिनीजी की दास्यभाव क
रत हें ॥ तातें उजीर कहे ॥ कुमारिका कात्यायनी देखि
के मिस करिके श्री यमुनाजी को रेनुको देखि मिस

निमा श्री यमुनाजी को पूजन कीयो ॥ तब श्री यमुनाजी ने
२५८ श्री ठाकुरजी को मिलाए ॥ कुमारिकान के मनोरथ सिद्धि
किए ॥ सो यमुनाष्टपदी में कहे हें श्री गुसांईजी ने ॥ कु
मारिकामपूरवे ॥ तातें श्री यमुनाजी को दासत्व कि
यो हें ॥ तातें कुमारिका को उजीर कहे हें अथवा सत
रंज पातसाह के आगें उजीर करत हें ॥ ताते पा
तसाह उजीर में भेद नांही हें ॥ एक ही हें ॥ तेसें इहां श्री
आचार्यजी नें पुष्टि मार्ग प्रगट कियो सो मुख्य श्री
स्वामिनीजी रूप हें ॥ पाछें श्री गुसांईजी प्रगट होय
इ सगरो पुष्टि मार्ग प्रगट किए ॥ सगरे पुष्टिमारग
की रीत करिकें भूमि पर विस्तार किए ॥ श्री चंद्राव
लीजी रूप तातें उजीर कहे हें ॥ तेसें ही कुमारिका स
गरी सेवा श्री ठाकुरजी की करत हें श्री स्वामिनीजी
श्री यसोदाजी के घर पधारत हें ॥ तिनहू की करत हें ॥
॥ श्री स्वामिनीजी की सेवा किये तें श्री ठाकुरजी कुमा
रिकान के ऊपर बहुत प्रसंन होइ सगरी सेवा मानि लेत

हें ॥ तातें श्रीललिता को अरु कुमारिकाको उजीर कहे
परंतु स्वामिनी हें ॥ पातसाह रूप दोउ नित्य सिद्ध ॥
प्रियादे सार हें सो अथ सषी श्री स्वामिनीजी की हें
अथ श्री ठाकुरजी की सषी हें ॥ तथा अथ सषी श्री
चंद्रावलीजी की मांनो ॥ अथवा सोरह प्रियादा हें सो
सोरह कलारूप हें ॥ सो कामकला प्रगट करत हें विहार
में सो तातें आज्ञाकारी प्रियादारूप हें ॥ सखी आदि सग
रें व्रजकी स्वामिनी को भाव प्रियादे में जाननो ॥ तातें
सगरे व्रजभक्तन के संग रमनीय हें ॥ तातें यासों नाम
सतरंज कहत हें ॥ सत कहिये सो कोसत कहिये ॥ ह
जार को सत कहीये ॥ अपार कोटान कोट स्वामिनी
तिनको मनरंजन करि प्रसंन करत हें ॥ सब सो रमन क
रे तातें सतरंज को नाव गायो हें ॥ या प्रकार चोपडि
सतरंज बाघ बकरी भावना करि खिलाईये ॥ पाछें सिं
हासन के दोऊ ओर खिलोनान की तबकडी धरीये ॥
॥ हाथी दांत के खिलोना बांई ओर ॥ काष्ठ के लाल खि

जिया जो नादछिन और॥ ताको भाव यह है॥ हाथी दांतके
२६ खिलोना श्रीस्वामिनाजी के मनोरथके हैं॥ श्री स्वामि
नीजी बनवाइ के धरत हैं॥ सो या खिलोनाके मिस गज
बत विहार जो ताके मिस भाव उदीपन करत हैं॥ और
काष्ठके खिलोना दछिन भाग॥ सो श्री चंद्रावलीजी
के मनोरथतें जाल धरत हैं॥ जाल रंग अनुसार सु
बन हैं॥ ताते जाल खिलोनाके मिस श्री चंद्रावलीजी
अपनो अनुराग श्री ठाकुरजी को निवेदन करत हैं॥
॥पाटकी आड बीचोवीच एक पाली लषी धरिये
तामें यह भाव विचारिये जो ललिताजी के मुखार
विंदको भाव है॥ दोउ जनें हाथ धोवें तबीचमें
ललीवूलदें हैं॥ या भावतें॥ पाटके ऊपर गेंद दोइ धरि
ये॥ कबहूं जडाऊ कबहूं सोनेकी कबहूं रूपेकी क
बहूं सूतकी ऊपर रेसमके फूलाबत्तूकी जाली॥ कबहूं
हाथीदांतकी॥ कबहूं काष्ठकी॥ सोनेकी गेंद सो श्री
स्वामिनीजी के कुचको भाव है॥ जडाऊ गेंद सो श्रीय

मुनाजी के कुचको भाव है॥ रूपेकी गेंद सो श्री चंद्राव
वलीजी के कुचको भाव है॥ सूतकी गेंद ऊपर फूलाब
त्तूकी जाली सो सोरह हजार कुमारिकाके कुचको भाव
है॥ कुमारिका अपने हाथसों भाव सहित रचिके बं
नायो है॥ श्री यसोदाजी को यह ज्ञान है जो मेरे॥ पुत्र
के खेलिवेके लिये गेंद बनावति हैं॥ हाथी दांतकी
गेंद ब्रजकी सगरी गोपी हैं॥ तिनके कुचको भाव है
॥ अपने कुचके अनुसार करि श्री ठाकुरजी को प
हिराव जतावत हैं॥ जो जैसे रास पंचाध्याई में गजव
ल्ली जा क्रिया तैसें ई अब फेरि करो॥ या भावतें हा
थी दांतकी गेंद है॥ काष्ठकी गेंद है सो ललितादिक
सखी सहचरी हैं तिनके भावतें हैं नानो प्रकारके रंग
की कबहूं लाल कबहूं पीरी कबहूं हरी कबहूं लहरी
याकी इत्यादिक वस्त्र पहिरे हैं॥ बचौ दोइ गेंदके पा
स लगाइ डांडी श्री ठाकुरजी के पास गादी सों लगा
इ धरत हैं॥ सो यह भावतें श्री ठाकुरजी अपने दो

लिया ऊहस्तमेंनीचेंकरि गेंदको स्पर्स करतहें ॥ अथवा दो
२६ ऊ वची व्रजभक्तनके भुजाके भावतहें कवहूं सोनें
की कवहूं जडाऊ कवहूं रूपेकी कवहूं काचकी ॥ सोनें
की श्रीस्वामिनीजी की दोऊ भुजाके ताके स्पर्स भाव
तें श्रीठाकुरजी करतहें ॥ जडाऊ वची श्रीयमुनाजी
की दोऊ भुजा रूपेकी वची श्रीचंद्रावली जीकी दो
ऊ भुजा ॥ काचकी वची कुंमारिकाकी दोऊ भुजाहे ॥ इ
त्यादिक भाव विचारियें ॥ दर्पन दिखाइ सिंहासन
पर पास धरीये ॥ दर्पन श्रीस्वामिनीजीके नखरूप
हें अथवा श्रीस्वामिनीजीको प्रतिबिंबहें ॥ तामें
श्रीठाकुरजी अपनपको देखिकें अत्यंत प्रसंन
होतहें ॥ अपनें हृदयमें श्रीस्वामिनीजी कों देखत
हें ॥ श्रीस्वामिनीजीके हृदयमें आपुनकों देखिकें
बहुत प्रफुल्लित होतहें ॥ पाछें आरती करीयें सो
व्रजभक्त अपने हृदयकी आर्त्तिताप न्योछावरि
करतहें पाछें फेरि दर्पन दिखावतहें ॥ सो यातें श्री

स्वामिनीजी अपनें हृदयमें श्रीठाकुरजी कों धरि
कें निकुंजमें पधारतहें ॥ तथा दर्पन दिखाइ अपनें
निकुंजके संकेत सूचन करतहें ॥ जो फूलनतें तोरमि
लेंगे ॥ पाछें फूलनकी माला वडी करतहें ॥ सो यातें
फूलनकी मालारूप सगरी व्रजकी स्वामिनी हें ॥ ति
नको आज्ञा प्रभु देतहें जो तुम अपने अपने कुंज
में पधारो ॥ सगरी स्वामिनी सिद्धि करो हम आवेंगें
प्रथम श्रीस्वामिनीजीके कुंजमें श्रीठाकुरजी कों
पधारनो हें ॥ तातें सगरी स्वामिनीके आगें रसा
वेस होइ ॥ तातें माला वडी करतहें ॥ पाछें सिज्यातें
सिंहासन पर्यंत पडो विछावतहें ॥ सो व्रजकी सग
री स्वामिनी प्रभु पधारें जो नि पावडे विछावतहें ॥
या प्रकार राजभोगकी आर्ती पर्यंत भावना विचा
रियें ॥ पाछें मंदिरके किवार लगाइये ॥ सो दोऊ कि
वार श्रीस्वामिनीजीके नेत्रनके पलक हें ॥ तिनके
भीतर श्रीठाकुरजी सदां विराजतहें ॥ पाछें सालामें

स्मिश्रा गलकोजे ॥ ताको श्री स्वामिनीजी के हस्तकी मुठी हे ॥
२६२ जैसे मुठि ॥ खोलेतो हस्तमें रतन आदि होइ ताको द
र्सन होई ॥ बंधी मुठी में काहूकों दर्सन न होइ ॥ तैसे
ताको खुलेतो प्रभु दरसन देइ ॥ ताको यातें श्री ठाकु
रजी कों श्री स्वामिनीजी ने अपनी मुठि करि मुठी
बांधि अपने वस करि राखे हैं ॥ जो और के वस न
होइ ॥ तातें जो श्री स्वामिनीजी को आश्रय करें ॥ ति
नकों श्री स्वामिनीजी प्रसन्न होइ अपनी मुठी खो
लि दर्सन करावे ॥ तब और को होइ ॥ ताहीतें श्री
आचार्यजी महाप्रभु स्वामिनी रूप हैं ॥ तातें श्री ठा
कुरजी इनके वस हैं ॥ तातें पुष्टिमार्गीय वैष्णव एक
ठ आश्रय श्री आचार्यजी महाप्रभून को करनो या
प्रकार ताको जगाइ मंदिर स्वोंदंडोत करि पाछे वैस
नवसों मिलि महाप्रसाद लेई ॥ काहेतें जैसे श्री वल्ल
भकुल में गुरुजो नि दास भाव राखत हैं ॥ तैसे ई वैष्ण
व में दास भाव राखे ॥ काहेतें वैष्णव में यह भाव करें

जो श्री आचार्यजी श्री गुसांईजी और श्री ठाकुरजी
सहित सबन के नो तरह ॥ तातें जैसे श्री वल्लभकुल
कूं श्री ठाकुरजी कूं जाने ॥ तैसे वैष्णव कुं जाने ॥ दास
होइ रहे ॥ दास धर्म तब सिद्ध होइ जब इनको जूंठ
न लेसो तो होइ ॥ दास होइ सो जूंठन लेइ और पुष्टिमा
र्गमें श्री वल्लभकुल और श्री ठाकुरजी इनकी जूं
ठ वैष्णव और की जूंठन लेइ तो मुख होइ जाइ ॥ औ
र जूंठनि वैष्णव की न लेइ तो दास धर्म हृदय में आ
वै नांहीं ॥ तातें श्री गोकुलनाथजी कहत हैं श्री
आचार्यजी लिखे हैं ॥ जासों सिद्धांत में प्रथम जाके
अर्थ का छिये पाछे ताही की जूंठन लई ॥ तातें प्र
भु की वस्तु में तें काहूकों देनो नांहीं ॥ तातें महाप्रसा
द की पातरि पहिलें वैष्णव की काढ़नी ॥ ता पाछें
सगरो महाप्रसाद बच्यो ॥ सो वैष्णवको जूंठो भयो
॥ तातें वैष्णव को पातरि धरि के ॥ महाप्रसाद ले
इ तो हृदय में दास्य धर्म आवे ॥ सर्व पदार्थ मिले

॥ तहां यह संदेह होइ जो वै सब पुष्टिमार्गीय मिलें तो
आछो ॥ कहूं न मिलें तो कहा करें महाप्रसाद लीये बि
नां शरीर चलै नांहीं ॥ वै सबके लिवाए बिनां महाप्रसा
द लेइ तो दासधर्म हृदय में आवै नांहीं ॥ वै सब हू मि
लैं नांहीं तो कहा करें ॥ तहां कहत हें श्री आचार्यजी
श्री सुबोधिनीजी में लिखे हें ॥ और श्री गुसांईजी टीप
नी में लिखे हें ॥ पुष्टिमार्गीय भक्त ब्रजभक्त हें ॥ तिनकों
दूसरो स्वरूप गाइ को हें ॥ तातें गाइ के जो ये पचास ति
महाप्रसाद में तें काढे ॥ तहां सगरे पुष्टिमार्गीय भ
वदीय की जूंठन भई ॥ पाछें महाप्रसाद लेइ तो वह
दोष नांहीं हें ॥ तातें गाइ को भाग काढनों हें ॥ वै सब हो
इ तो उनसों मिलिकें महाप्रसाद लेइ ॥ महाप्रसाद
में अपनें शरीरकों भोग न विचारें ॥ जामें लेकें पुष्टि
होइ ॥ यह भाव विचारें जो महाप्रसाद लियें तें भगव
द सेवा बनेंगी सो सामग्री में बिगर्यो सुधर्यो होइ सो
रसोई जरनवारी सों कहीये ॥ आगकों सुधारिकें

रसोई करे रसोई करत होइ ताके ऊपर बहुत प्रीति
राखिये ॥ या मारगमें रसोई परम फलरूप है ॥ या प्र
कार महाप्रसाद लै मुख हस्त शुद्ध करि आइ पाछें बी
री वै सबकों देइके आपु लीजे ॥ बीरी श्री ठाकुरजी
आरोगें होइ सो सेवा करनवारो लेइ ॥ जिनके मा
थे श्री ठाकुरजी विराजत होंइ तिनहीकों अधिकार
है ॥ यह तें बीरी श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी मि
लिकें आरोगत हें ॥ पाछें उगार ललितादि सखीन
कों देत हें ॥ और कों अधिकार नांहीं हें ॥ और बीरा
है सो श्री ठाकुरजी सखन कों गोपन कों बांटि देत हें
॥ ताही तें श्री गुसांईजी बीरी और कों ~~[illegible]~~ नां
हीं देत हें ॥ पाछें व्यापार अर्थ जानों होइ तो जैये ॥ आ
लस होइ तो दोइ घरी चारि घरी विश्राम करीये यह
भाव विचारिकें जो उत्थापन तें अपराध न परे ॥ यह
भाव विचारि विश्राम करे ॥ पाछें उठिकें पोथी बां
चनों ॥ आपुनकों बाधिबेकों ज्ञान न होइ तो काहू

तिनावै सबसों वचाय श्रवन करनों अपने इतनमार्गी
२ हैंच पावै सब होइ तिनहीं के मुषते श्रवन करनों ॥ जा
हते श्री आचार्यजी लिषे हैं ॥ निवेदनं तु स्मर्तव्यं
सर्वथा तादृशैर् इति ॥ तादृशी सो कहा ॥ जाकों पह
पुष्टिमार्ग की रीति भाव को ज्ञान होइ ॥ ताही के संग
स्मरन में आगरी बात जानेंगे ॥ तातें तादृशी कहे
हें ॥ पाछें उत्थापन कों समय पहर एक दिन रहे तें
वहीतें चिंता राषनी जो मलिकहूं श्री ठाकुरजी को
अवेरन होइ देह शुद्ध करि पाछें न्हाइ अपरस व
पहिरि चरणामृत ले तिलक करीयें गृहस्थ हूं शुद्ध
स्नान किएतें होइ ॥ नीतर देह आत्मा हू दोउ शुद्ध च
रणा अमृततें होइ ॥ तातें चरनामृत लेए विना भगव
द सेवा की योग्यता नांही है ॥ चरणामृत लेंसे वा जो
ग्य होत न शरीर होइ जाइ तातें चरणामृत लेंनों
॥ पाछें उत्थापन की सांमिग्री सिद्धि करीयें ॥ आंव
कों करी परवु जापना अपनी जलें रथ जात्रा तांई मी

मीदार अपनी जलें रथ जात्रा तांई जो जो दासि अष
ती जलें रथयात्रा तांई ॥ चंदन को कटोरी अषती जलें
रथयात्रा तांई ॥ ईपत पाई षकोरस प्रबोधनी तें डो
ल तांई छाक की दासि रथयात्रा तें जन्माष्टमी तांई ॥ द
ही अंगराज तें राजभोग तांई पाछें नांही ॥ सषडि
ते भोग जातें राजभोग तांई पीछें नांही ॥ उत्सव के
दिन कछो नांही तो नकुडा करीये उत्थापन समय
में फलादिक सिद्ध करि पाछें घंटा तो न वाजव
जाइ उत्थापन करि दंडोत मंदिर कों करिजो तब जै
ये ॥ सिंघासन तें सिज्या तांई पेंडो विछो होइ सो उ
ठाइ के दरसन के किवार षोलिये ॥ काहेतें पेंडो श्री
स्वांमिनी जी की उतरी को भाव है ॥ प्रभु के अर्थ निकु
ंज के मारग में बिछावत हैं ॥ तातें उठाइ के दरसन हो
जो ॥ कोई गूढ भाव को ज्ञान काहू कों
न होइ ॥ पाछें सिज्या पास की झारी बंटा माला बीडा
सिंहासन पर झारी माला सब उठाइ प्रसादी पात्र

निना में ठाढ़ाई ये वासन धोइ झारी बगारिकें पै भरनी।
२६५ झारी तीनमें आछ्भरी जाई ‖ प्रथममंगलाभोगमें मां
जिकें भरें ‖ दूसरी शृंगार होत में ‖ तीसरे शृंगारमें
चोथे राजभोगमें ‖ पांचमें राजभोग सरें ‖ छठे उ
त्थापनकी ‖ सातये सेनभोगकी ‖ आठये सेनभोगस
रे पाछें ‖ ताको अभिप्राय यह है ‖ नित्य अष्टसखी तथा
व्रजकी अनेक स्वामिनीनके मनोर्थकी सांमग्री है
श्रीस्वामिनीजी धरावत है ‖ उत्सवके दिन श्रीस्वा
मिनीजीके मनोर्थकी सांमिग्री है ‖ श्रीस्वामिनीजी
आप उपधरावत है ‖ तातें उत्सवके दिन सखीभोग
की झारी दोइ अधिक भरीये ‖ तथा दोइ न होइ तो एकतो
अधिक भरीये ‖ उत्थापनकी झारी नरिसो सखीभोग
धरिये ‖ कंदमूल फलादिक थार एकमें पपडी लोन
भुरकाइके ‖ पूरी मेंदाकी तथा चूंनकी ‖ एक कटोरी म
लाईकी ‖ कटोरा एकमें चोवाके लडुवा ‖ उत्सकाल
होइ तो अषती जैसें रुपजावातांई मिश्रीको पनो

सीतकालमें प्रबोधनीतें डोलतांई ‖ ईषकोरस तथा
ईषके गांडकी गडेली छिलिकें ‖ आंवषरबूंजा मिलें
तवही धरें ‖ कितनी वस्तको प्रमान ‖ कितनी वस्तको
प्रमान नांही है पनांभो जीदारि छोंको दार चंदन[illegible]स्या
[illegible]क सीतकारमें ईषकोरस गडेली यह प्रमानसों
श्रीचंद्रावलीजीके भावसों ‖ काहेतें श्रुतिरूपा है ‖ श्रु
तिमें प्रमाण है ‖ तातें श्री श्रीगुसांईजी भगवदसेवा
में प्रमाणसगरी वस्तु रितसमयसमयके प्रगट अ
पनो भाव जताए है ‖ और आंवषरबूजा मेवा नित्य
जहांतांई मिलें पामें प्रमान नांही है ‖ काहेतें यह
श्रीस्वामिनीजीके मनोर्थकी सांमिग्री है ‖ तातें श्री
स्वामिनीजीके भावमें है ‖ सबवामें जो जासमय मिलें
बनि आवे सो अंगीकार करवैये ‖ दंडोत करिके प्रार्थ
ना करि बाहर आइ समय भए भोग सराइ आचमन
मुषवस्त्र करि वीडा दइ छिन दस धरीये ‖ सीतकाल
होइ तो भोगके किवार षोलिकें ‖ पाछें चोष टके पी

नि॰भा॰ २६६ छै अंगीठी धरीयें उसकाल होइ तो सिरकाव कीजे
दोइ बार ॥ राजभोग सरे तब ॥ दूसरे भोग समय ॥ स
मय भये टेरा दे संझा भोग वै सबके घर नाहीं ॥ भा
वना करि भोग के किवार खुलें ॥ तब पे सिज्या
मंदिर में जाइ सिज्या वोहि फेरि कसना क
सि ऊपर चादरि उढाय मारी नरि सिलोना ऊन
इ सिंघासन आगें भी ज्यो हाथ दे संध्या भोग
में और संधानेकी कटोरी धरि प्रार्थना करि वा
हर आइये ॥ समय भये भोग सराय आचवन क
राय वस्त्र करि वीडा धरि संध्या आरती करिये
वै सबके घर संध्या आरती नाहीं ॥ पाछें [illegible]
खेडो कराये ॥ वडी माला हार चंद्रका पूंवद
पवडे कीजे ॥ कर्णफूल वेसरि चिबुक तिल
क कंठश्री कटि किंकिनी पहुंची नूपुर इत
नो श्रृंगार रहें ॥ सो श्री स्वामिनी जी के भाव के
हैं भारी आभूषन ॥ और व्रजभक्तनके मनौं

र्थ क्यों है ॥ तातें न रहें ॥ पाछें भारी जल डवसा भोग वै सबके
घर नाहीं ॥ पाछें सेंन भोग आवे ॥ सेंन में सषडी आव
श्यक चाहीये नव नेतो द्वादसी के दिन आवश्यक करीये
दारि मूंग को भात मिरच को साक राजभोग की सो मिश्री मे
ठी होइ तो मेलें ॥ थारी सीधरि साधी ये सो भोग धरी
ये ॥ संधानेकी कटोरी धरीये ॥ जोनकी कटोरी धरीये
एक जलकी कटोरी भारेके धरीये ॥ एक कटोरी दूध धरी
ये एक कटोरी दूध भात न्यौरा धरि राखिये ॥ पाछें दंडो
त करि टेरा दे बाहिर आइये ॥ जब आधो समय होइ चुके तब
दूसरो भोग धरीये ॥ गाढो औटयो दूध तामें चमचा सोनेको
तथा रूपेको तथापी तरिको तथा कांसेको डारीये ॥ एक क
टोरा में दूध भात एक कटोरा में केवल दूध ही ॥ सषडी नव
नेता दूध सेंन में आवश्यक ही धरीये ॥ काहे ते दूध सेंन में हो
इ तो सगरे दिनको सो मिश्री दूधकी नाहीं प्रभुको सुष हो
इ ॥ तातें दूधको सेंन में श्री स्वामिनी जी को अधरामृत है
अत्यंत मीठो गाढो है ॥ यह भाव ना करि भोग धरि दंडो

निमा तप्रार्थनां करिवाहू आईये ॥ आषो समय होइ चुक्यो हो
२६ इलवकारीलें आचमन कराइ मुष वस्त्र करि बीडा आरोगा
इवाराढां हिनी आर धरिये सेनके दरसन सेवा संबंधी
वार करें ॥ आरकोंनांई कराईये ॥ पाछें वागा वडो करि
पाग टोपी सदां रहें सिज्यापर पोढाईये ॥ सेनकी आर्ती
वैसवके घरनांहीं हें ॥ सिज्यापास दोइ झारी धरीयें ॥ दो
इ नवनेता एकता धराए ॥ वीराकी तवकडी धरीयें ॥ से
ज्या भोगको वंटा धरीयें ॥ कटोरी एक संधानेकी धरी
ये कटोरी एक मांषनकी कटोरी एक मिश्रीकी धरीये
आछी भांति ढांकिके धरीयें ॥ पाछें रितु अनुसार
उकों उढाईयें ॥ पाछें सिंहासन वस्त्र उलटिकें ढांकि
धरीयें ॥ श्री स्वांमिनी जी होइ तो श्री ठाकुरजी कुं जा
मजाग पोढाईयें ॥ प्रसिद्धि न होइ तो भावनां करीयें ॥ तां
में दोइ प्रकारको भाव हें ॥ श्री ठाकुरजी श्री यसोदाजी कें
घर पोढत हें ॥ तहां रात्रिकों श्री ठाकुरजी की वें कन्या
री हें तहां कुमारिका रात्रिको सवा मेल स्पुरहें ॥ कवहूं

सषीजन श्री स्वांमिनी जी को श्रृंगार करि श्री ठाकुरजी
पास पधराइ ल्यावत हें ॥ कवहूं श्री ठाकुरजी आपु ल
लिता विसाषाके संग वनमें पधारत हें ॥ कवहूं नंदाल
यतें कुमारिकाके । संग श्री ठाकुरजी वनकों पधारत हें
गत वरसानेतें ललिता आदि सषीके संग श्री स्वांमि
नीजी आवत हें ॥ सो श्री ठाकुरजी दोउ सरूप परस्पर
मिलिकें निकुंज मंदिरमें लीला करत हें ॥ तहां श्री ठाकु
रजी को हृदय कोटिकोटि दर्पनतें अधिक सोभा देत
हें ॥ तनमें श्री स्वांमिनी जी अपनो सरूप देखिकें म
नमें यह जांनत हें जो श्री ठाकुरजी के हृदयमें दोसरी
नाइका विराजमांन हें ॥ यह जांनि मनमें क्रोध करिकें
मांन होत हें ॥ कवहूं श्री चंद्रावली जी के हृदयमें देषि
कें मांन करत हें ॥ कवहूं श्री यमुनाजी कों देषिकें हृद
यमें श्री स्वांमिनी जी मांन करति हें ॥ कवहूं श्री चंद्रा
वलीजी व्रजकी स्वांमिनी जी देषिकें मांन करति हें
॥ तव प्रभु अपने मनमें सवकों भाव जांनि श्री स्वां

स्वामिनी जी को मानमनावतहो ॥ और श्री चंद्रावलीजी
२८ कोहू मानमनावतहे ॥ कबहूं श्री चंद्रावली जी ॥ और श्री
यमुनाजी और कुमारिका और व्रजकी सगरी स्वामि-
नी मिलिके श्री स्वामिनी जी सों दीनता करतहे ॥ जो
हमको अपनो दासत्व देउ हम तुम्हारे समान नांही
हे ॥ तुम्हारी दासी हे ॥ ताते तुम्हारे आगे हमको प्र-
गट है मिले ॥ परंतु तुम्हारी हे ॥ या प्रकार दीनता के
वचन सुनिके श्री स्वामिनी जी कहति हे चतुर चोक
ट कला ॥ तदपि नारी ॥ एसी चतुर सिरोमनि है ॥ तो
कुमारी ताते सगरे व्रजकी स्वामिनी न की देख लाइ
लिके श्री स्वामिनीजी प्रसंन होइके बोलत भई जो
तुम्हारा नाम व्रजरत्ना हे ॥ काहे ते व्रजके रत्न तुम
हीहो ॥ सो यात जो श्री ठाकुरजी में अपनो पतिभाव कि-
यो हे ॥ या समान और उत्तम भाव नांही हे ॥ ताते तुम
उत्तमते उत्तम हो ॥ याते हमारे ते तुम में उत्तम भाव ब-
हुत हो अधिक हे ॥ एकलो सदा पवित्र रहत हो ॥ कोई

गोपको संबंध तुममें नांही हे ॥ पुत्रादिकहूं पतिहूं ॥ प
हुंचाव मेलो क्लिकके दिखाइवेको हे ॥ परंतु तुम सों सं-
बंध नांही हे ॥ और दूसरे निरुपाधिक हो ॥ हमारे विहा-
र के अर्थ सहाइक हो ॥ उपाधि ईर्षा तुम्हारे नांही हे
॥ तीसरे प्रेम विसनात्मक हो ॥ रासादिलीलामें वि-
सेष ह्रदयमें बहुत प्यारी हो ॥ हमारे जुगलसरूप
में एकरस निरंतर प्रिय हे ॥ चौथे केवल दासभाव
हो जो जुगल सरूप में दासभाव करि अति सों टहल कर-
तिहो ॥ ताते हम तुम पर प्रसंन हे ॥ पांचये तन मन सर-
काहो ॥ तन मन धन एक प्रभु के अर्थ हे ॥ तुम सगरी
एक मनकी हो आपुसमें कलह वालो किंचित बुद्धि नां-
हीं हे ॥ सगरी मिलिके रहत हो ॥ एककी एक कबहूं घा-
टी घरी कहत नांही ॥ इत्यादिक तुममें अपारगुन हे ॥ ह-
मारे मेतो एक स्वामिनी भाव प्रसिद्ध रह्यो हे ॥ ताते तु-
म व्रजरत्ना सुषेन होइ श्री ठाकुरजी सों विहार करो ॥ ह-
मको ईर्षा विषाद नांही हे ॥ या प्रकार श्री स्वामिनी जी

जिन्हा के निसकपट शुद्ध वचन सुनिकें प्रजन की सगरी स्वा
२६८ मिनी प्रसंन भई ॥ तहां श्री ठाकुरजी कों सरूप के सौसुं
दर स्यांम घन रूप हैं ॥ तहां श्री स्वांमिनी जी के भाव
तें श्री ठाकुरजी गौर सरूप हैं ॥ जैसो तप्त स्वर्ण ऐसो
झलमलात है ॥ तहां अंग अंग में आछे विकहार
मनिन के आभूषन धरे हैं ॥ मोतिन की माला पहिरें
हैं ॥ जैसे जैसे आभरन हैं ॥ तैसें ही निकुंज भवन मं
दिर हूं प्रगट भए हें ॥ कहूं सोने के कहूं रूपे के कुंज
कहूं हीरान के कुंज ॥ कहूं मोतीन की कुंज ॥ स्यांमी
क कुंज अपार प्रगट भए ॥ तातें श्री स्वांमिनी जी के
सुष अर्थ सगरे अस्थल प्रगट भए हैं ॥ सो निकु
ज चैतन्य वजायमान हें ॥ जहां जहां जुगल सरूप
की इछा होइ तहां आपुहीं पधारें ॥ जहां जहां इछा अ
नुसार तह निकुंज हूं संग चलें श्री स्वांमिनी जी पदि
क पहिरे हैं ॥ तथा चोकी पहिरें हें ॥ सोई निकुंज मंदि
र में अनेक षिरकी जाली प्रगट होत भई श्री स्वांमि

नी जी श्री ठाकुरजी मोतिन की माला तथा मनि की
माला तथा फूलन की माला तथा वनमाला पहिरें हें ॥
सोई निकुंज मंदिर में अनेक प्रकार के द्वार के ऊपर
तोरण तोरण वंदनवार सोभा देत हें ॥ अनेक स्वांमिनी
अंचल किनारी झालरि पुलक सो वयार तें झलमला
त फहरात हें ॥ सोई निकुंज मंदिर में तोरण तोरण धुजा प
ताका सोभायमान हें ॥ श्री स्वांमिनी जी के श्री ठाकुर
जी के उदर पर तीन तली नेर घा हें ॥ सोई निकुंज में नेसें
नी लिनदंड की प्रगट भई है ॥ श्री स्वांमिनी जी की श्री
ठाकुरजी की नाभि सरोवर हें ॥ तातें निकुंज में नाना प्र
कार के कुंड प्रगट भए हें श्री स्वांमिनी जी के श्री ठाकु
रजी के नासिका तें स्वास चलत हें ॥ ताहीतें निकुंज
मंदिर में सीतल मंद सुगंध वायु वहत है ॥ फूलन के
आभूषन जुगल सरूप श्री स्वांमिनी जी श्री ठाकुरजी
पहिरें हें ॥ तिनतें नाना प्रकार के फूलन के निकुंज
प्रगट भए हें ॥ सुक आदि पंछी नासिका तें प्रग

निजा: टनतें हें ॥ हंसादिक पंछी श्री स्वामिनी जी के चरनतें
२७. प्रगट भए हें ॥ सिंह आदि श्री स्वामिनी जी की कटितें
प्रगट भए हें ॥ भवर मीन षंजन मृग आदि श्री स्वामि
नी जी के नेत्रनतें ॥ प्रगट भए ॥ या प्रकार निकुंज में
पशु पंछी सब जुगलसरूप के अंगतें ॥ प्रगट भए हें ॥
तब श्री स्वामिनी जी को प्रागट्य जानि जुगलसरू
प सों कहें ॥ बिना सगरी स्वामिनी निकुंज में जात
भई सो निकुंज मंदिर के मांतिमां लिके दरसन पा
ए ॥ परंतु निकुंज को द्वार काहू को मिल्यो नांही ॥ तब
सगरी स्वामिनी द्वार को देखि के निरास होइ के फि
र आई ॥ जुगलसरूप रतन जटित सिंहासन प
र बिराजे हें ॥ तहां आइ श्री स्वामिनी जी के चरनक
मल कों नमस्कार करी पाछें श्री ठाकुरजी के चरन
कमल कों नमस्कार करत भई ॥ पाछें बिनती करी
जो हम तुम्हारे हें ॥ तुम्हारी आज्ञा बिना निकुंज
की रचना कों देखन गई ॥ सो बहुत प्रकार ढूंढ्यो प

रंतु निकुंज को द्वार पायो नांही ॥ तातें अब सगरी
तुम्हारे सरनि आई हें ॥ तब श्री स्वामिनी जी श्री ठा
कुरजी सों प्रसन्न होइ के कही जो ये तुम्हारी प्यारी हें
तातें मो हूं कों अत्यंत प्रिय हें ॥ सो इनको न्यारो न्या
रो निकुंज दीयो चाहीये तब तुमसों विहार होइ ॥ त
ब श्री ठाकुरजी कहे ॥ ये सगरी प्यारी हें सो तुम्हारे आ
ग्रसों प्रगट भई हें ॥ तातें तुम्हारो संबंध तें हमकों
बहुत प्रिय हें ॥ सो यह बात तुमकों उचित हें जो अ
पनी होइ तिनको ठिकानो दियो चाहीये तब ॥ श्री
स्वामिनी जी श्री ठाकुरजी उठि के परस्पर कंठसों
गलबांही दे ॥ प्रेम में मत्त होइ दोऊन के नेत्र कमल
घूमत मंद मंद गजराज की चाल करिके निकुंज
के द्वार आवत भए ॥ तहां पुलिंदि आदिन को दरस
न दीए ॥ सब उन दरसन करि नेंन अश्रुपात करि तहां
राखे ॥ बनमें गिरिराज के आस पास ॥ सो पुलिंदी
कों श्री ठाकुरजी के अंग अंग की सोभा देखि के सा

निमा: लालमनमथके मन्मथरूपहैं अलौकिक कामदे
२७१ व उत्पन्न होत नयो ॥ तब जुगलसरूपके चरनकमर
नकौं कुंमुकुंमु नेत्रमें दूवमें ठारठार देखिके सार
सरूप कुंमुकुंमुलेके पुलिंदी अपने मुपतें अपने
कुचनसौं लगावत भई ॥ ताकरिके तनकी सगरी ता
प दूरि भई श्रीठाकुरजीके मिलनको सुख होत भ
यो ॥ तहां यह संदेह होइ जो जनीको यह सुख भयो
क्यों भयो ॥ तहां कहत हैं ॥ पनारेको जल गंगाजीमें
जाइ तो गंगाजल होइ ॥ तैसे गिरिराज जो कृष्ण
पुलिंदी हूं भगवदी भई ॥ ताते यामार्गमें भगवदी
यकौ संग निश्चय कर्तव्य है ॥ गिरिराज पुष्टिमा
र्गमें भक्तराज मुख्य है ॥ जिनको कियो सर्व पदा
थ अंगीकार करत हैं तृन फल फूल झरनाको जल
सिलापर बैठत हैं ॥ कंदरामें पोढत हैं ॥ सिज्यारूप
घररूप ॥ जहां जैसो कार्य होइ तहां तैसो रूप धारि
नकरि सेवा करत हैं ॥ ताही मनिमय चित्त द्वारपर जु

गलसरूप नाठे होइ सकल स्वामिनीकौ स्वरूपा
नंदको अनुभव कराइ ॥ पाछें जुगलसरूप सगरी स्वा
मिनी परकृपा करिकें संगलें द्वारके भीतर श्रीवृंदा
वनमें पधारे ॥ तहां अनेक मारग हैं ॥ अनेक निकुंज
हैं अनेक स्थलके अनेक धातुके अनेक कुसमके ॥
अनेक वृक्षके तिनमें जा स्वामिनीजीके अंगमें जा कु
सुमकी सुगंध हुती ॥ ताकों ताही कुंजमें रहनकों आ
ज्ञा दिये ॥ जिनके अंगमें चंपेकी सुगंध हुती तिन
कौ चंपानके फूलनकी निकुंज चंपाको वन तहां सग
रो चंपाको फूलनकी सामा है ॥ तिन स्वामिनीको चंप
कलता नाम हू है ॥ याही प्रकार सगरे कुसमके नाम
स्वामिनीके हैं ॥ तेही कुसमकी सुगंध स्वामिनीके
अंगमें है ॥ तैसे ही कुसमके निकुंजमें वास दियो है
॥ ताही ताही भावकी स्वामिनी हैं ताहीं भावके श्रीठा
कुरजी पधारे हैं ॥ या प्रकार कुसम संबंधी स्वामि

स्विमा॰नी कोटांनको टिहें ॥ तिन सबनको निकुंज बनाएहें ॥
२०२ आगें धातुके निकुंज हें सोहें पीतरि ॥ कांसी फूलम
रत रंग सीसा जस्त इत्यादिकके तांमसी निकुंजहें ॥ प
जनके सातुकी निकुंज हुतें धातुके तांमसी निकुंज
में तांमसी स्वांमिनी कोटांनको टिहें ॥ तिनको जेसो
भाव जिनको जेसोई निकुंज दीयाहें ॥ तहां ता स्वांमि
नी के भावके श्री ठाकुरजी पधराइ तिनके मनोरथ
पूरणं कीयेहें ॥ याप्रकार धातुके संबंधी स्वांमिनी
नके मनोर्थ पूरणं कीएहें ॥ पाछें राजसी निकुंज
मनि मुक्ता कांच आदिकके अपारहें ॥ तहां राजसी
भक्त कोटांनको टिहें ॥ तिनकों तिहांते स्वांमि वरा
स निकुंजके मुखिया किएहें तहां लेसोंवन [illegible]
[illegible] लहांतेसें भावके ॥ श्री ठाकुरजी पधराएहें ॥ या
प्रकार सगरे भक्त राजसी तांमसी सातुकी भक्तनकों
राखिके ॥ पाछें श्री चंद्रावलीजी श्री यमुनाजी श्रीकुं
मारिकाजी यतीनो जूथपतिकों संग लें श्री स्वांमिनी

जी श्री ठाकुरजी सहित नीतरप धारत जए ॥ तहां प्रथ
म श्री यमुनाजी को निकुंज दीनें ॥ काहेतें चारो जूथप
तिनके निकुंजमें श्री यमुनाजी की कृपा होइ तब जाइ ॥ त
हां श्री स्वांमिनीजी के भावके श्री ठाकुरजी पधराएहें ॥
ऊपर राजसी तांमसी सातुकीके निकुंज कहे ॥ अब ये
चारो जूथपतिके निकुंज निर्गुणहें चारो जूथपति
स्वांमिनी निर्गुणहें ॥ तातें इन चारोनके निकुंजमें
इनको अधिकी भावहे ॥ जो जब इछा कुसमकी होइ
तब कुसमके निकुंज होइ ॥ जब इछा धातुकी होइ त
ब सोनें रूपेकें सीसा पीतरि इत्यादिकके निकुंज होइ
॥ जब इछा मनिमोतिनकी होइ ॥ तब मांनिक हीरा म
निमोती आदि काचादिककी भांति भांतिकी रचना हो
इ ॥ सो और स्वांमिनीनकी निकुंजमें न होइ ॥ याप्रका
र श्री यमुनाजीके निकुंजके आगें अगन कुंमा
रिकाके निकुंज दिए तहां कुंमारिकाके भावके श्री
ठाकुरजी पधराएहें ॥ तिनके आगें श्री स्वांमिनीजी

निभा-नें प्रसंन होइ अपनें हार पर श्री चंद्रावली जी कों नि
२७३ कुंज दीयो ॥ तहां श्री चंद्रावली जी के भाव के श्री ठाकु
रजी पधारे ॥ और अति रूपा स्वांमिनी को टांनको
टि हें ॥ तिनको निकुंज राजसी तांमसी सात्वकी के नि
कुंज में सब आई गई अकेली श्री चंद्रावली जी के भा
व को निकुंज नीत रहे ॥ तेसेई सोरह हजार अग्नि
कुमारिका हें ॥ तिनको निकुंज राजसी तांमसी सात्
वकी के निकुंज में रहें ॥ अकेले राधा सहचरी तिनकी
निकुंज नीत रहे तेसेई श्री यमुनाजी के अनेक सरूप
हें ॥ तिनके निकुंज राजसी तांमसी सात्वकी तिनमें हे
॥ निजरूप श्री यमुनाजी को है तिनको भी निकुंज नीत
है ॥ तहां यह आसंका होइ जो नीतर श्री चंद्रावली जी
श्री यमुनाजी कुमारिका के न्यारे न्यारे निकुंज हें तहां
अकेली रहत होइगी यह आसंका होइ ॥ तहां कहि
त हें ॥ तहां श्री चंद्रावली जी के भाव की श्री चंद्रावली
जी के भाव सुभाव आज्ञा अनुसार कोटांनको

टि सखी हें ॥ सो सगरी स्वांमिनी जी नि सखन सेवा करत
हें ॥ एसेई कुमारिका के भाव सुभाव अनुसार अनेक
दासी हें अनेक सखी हें ॥ सो अपनी स्वांमिनी जी नि
कुमारिका की सेवा करत हें ॥ एसेई श्री यमुनाजी के
भाव सुभाव आज्ञा अनुसार की अनेक दासी हें ॥ सो
श्री यमुनाजी को अपनी स्वांमिनी जांनि सेवा करत
हें ॥ या प्रकार तिनो जूथपति स्वांमिनीनको निकु
ज की हें ॥ पाछें मुख्य श्री स्वांमिनी जी और श्री गो
वर्द्धनधर आगें पधारे ॥ तहां अनिर्वचनीय निकुं
ज हें ॥ जहां पुरषोत्तम भावनां ही हें ॥ पशु पंछी सग
रे स्त्री रूप हें ॥ तहां को निकुंज मन वांनी को अगोचर
रहें ॥ कह्यो नहीं जाइ ॥ तहां अपुने अंग तें आपुने
भाव सुभाव के अनुसार तें सखी प्रगट की एहें ॥ ति
नहूं को नाम ललिता विसाखा आदि हें ॥ जगत में
प्रसिद्ध ललिता विसाखा हें ॥ सो गोपन की बेटी
हें ॥ तिनको निकुंज राजसी तांमसी सात्वकी आदि

लिमा· मेंहें ॥ तहांएकनिकुंजवृषभांनसुताजोराधाहें ॥ ति
२०४ नहूंकोराजसीतांमसीसात्वकीमेंनिकुंजहें ॥ जिन
कोंसगरोजगतभजनकरतहें अवभीतरसबके
जोस्वांमिनीहें ॥ औरश्रीगोवर्द्धनधरकहेहें ॥ सोस
रूपमनवांनीकोंअगोचरहें अनिर्वचनीयहें ॥ त
हांश्रीस्वांमिनीजीअपनेंअंगतेंकोटांनकोटिस
षीप्रगटकीएहें ॥ तिनकोंनांमललिताविसाषाआ
दिहें ॥ विहारमेंअत्यंतचतुरललिततथारूपहें ॥ ता
तेंनांमललिताहेहें सषीजाकीरीतिविपरीतमें
आसनमेंपरमचतुरहें ॥ तातेंविसाषायहनामस
हेहें ॥ यहभीतरकोंसरूपजवसारस्वतकल्पआवें
तवपूर्णश्रीगोवर्द्धनधरपूर्णश्रीनंदरायजीकेघ
रप्रगटहोइ ॥ ताहीसमयभीतरकेंनिकुंजकोस्वांमि
नीपूर्णसोपूर्णश्रीवृषभांनजीकेघरप्रगटहोइ
॥ ताहीसमयसगरीलीलापूर्णपुरुषोत्तमकीभी
तरकेंनिकुंजकीप्रगटहोइतवपूर्णश्रीचंद्रावली

जीपूर्णश्रीयमुनाजीपूर्णकुंमारिकापूर्णललिता
विसाषाआदिसषीसगरीबाहिरकेंनिकुंजकीश्रीय
मुनाजीतहांकीश्रीचंद्रावलीजीअतिरूपातेसेंईबा
हरकेंनीकुंजकीअग्निकुंमारिकाजोसगरेनिगज
गतमेंगावतहें ॥ प्रसिद्धिनांमहें ॥ इनकीप्रमांणसहि
तालीलाजवजवद्वारपरहोइ ॥ तवतवप्रगटहोइ
॥ पृथ्वीकेअंसकलारूपलीलाकरतहें ॥ सारस्वतक
ल्पमेंपूर्णपुरुषोत्तमकीअप्रमानलीलाअसंक
ल्पकेअवतारमेंलीलाहें ॥ तहांब्रंह्मादिकशिवा
दिकइंद्रादिकफूलवर्षावतहें लीलाकोंदरस
नकरतहें ॥ पूर्णपुरुषोत्तमकीलीलामेंइंद्रादिक
ब्रंह्मादिकशिवादिककोंज्ञांनहोइनांहीं ॥ उनहूंकी
मनवांनीकोंअगोचरहें ॥ तहांपूर्णपुरुषोत्तमकें
अंगतेंरसरूपआधिदैविकहें ॥ ब्रंह्मादिकशिवा
दिकइंद्रादिकप्रगटहोइप्रभुकीअस्तुतिकरि
अनेकफूलनकीवर्षाकरतहें ॥ तिनकीली

लिला॥ जा मनवानीमें आवेनाहीं ॥ तातें अंसकलाके अ
२७५ वतारकी लीला तिनहीकी पूर्ण जानिके भावस
हित भजन स्मरन करे तो पूर्ण पुरुषोत्तमकी लीला
की प्राप्ति होइ जैसें श्री यमुनाजी विराजत हैं गिरिराज
विराजत हैं ॥ इनहीमें सारस्वत कल्पके ॥ पूर्ण पुरुषोत्तम
कै भाव करि इनकों पूर्ण जानि स्मरण कर सेवा करें तो इ
नहीकी कृपातें इनहीं पूर्ण पुरुषोत्तमकी लीलाजो प्रा
होइ ॥ ऐसेंही व्रजनाम कुमारी नंदनंदनको भजन स्म
र्ण सेवा सारस्वत कल्पके पूर्ण जानि करें ॥ तो पूर्ण पुरुषो
त्तमकी लीलामें प्राप्त होइ ॥ या प्रकार श्री आचार्यजी महा
प्रभुजीको निकुंज श्री गुसांईजीको निकुंज सगरे निकुंज
में जातरहे ॥ तातें श्री आचार्यजीने प्रभुदासकों कह्यो है वृ
धेवृधे वेनुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः अपार निकुंज है
तहां अपार श्री ठाकुरजी हैं ॥ तहां अपार भक्त हैं ॥ ठारठौर
अपार लीला है ॥ एक वन निकुंज है ॥ तातें बन निकुंजको
पार नाहीं है ॥ ताहीतें वृंदावन है ॥ तामें वृंदा जो अपार

बन कुंज है ॥ तहां सगरे निकुंजमें प्रभु न्यारे न्यारे भक्तन
के संग दान लीला विहार लीला रासलीला [illegible]
बाललीला आदी सबही करत हैं ॥ या प्रकार सगरी व्रजकी
लीलाको पार नाहीं है ॥ गिरिराजमें आठही द्वार हैं ॥ तहां अ
ष्टसखा अष्टसखी दोउ एकही रूप जो जाके सहाइ कहे
अष्ट प्रहर रहत हैं ॥ तातें आप आप पुष्टिमार्गमें भगवदी
य मुख्य भए ॥ सो सगरी लीला सारस्वत कल्पके पुर्ण पुरुषो
त्तमकी अनुभव करिके गान कियो है ॥ चारो जूथपति
मुख्य श्री स्वामिनीजी श्री यमुनाजी श्री चंद्रावलीजी श्री
राधा सहचरी इनको भाव लीला बुद्धि अनुसार वर्णन
करे हैं अब श्रुतिरूपा कुमारिकामें साधनतें सिद्ध भ
ई सो वार्ता कहत हैं काहे ॥ ते तितर होइ सब चुगें तातें तें तीय
साधा भई ॥ एकसमय वेदमें श्रुति दोइ प्रकारकी हैं ॥ एक
पुष्टि श्रुति एक मर्यादा श्रुति ॥ तिन दोउ श्रुतिनमें आप
समें वाद भयो पुष्टि श्रुति कहें अक्षर ब्रह्मके भीतर वधू
मारी पदारथ हैं ॥ तब मर्यादा श्रुतिनें कही सबतें पर अ

अक्षरब्रह्म है॥ ताके आगे तिनतें हमको ग्यान नांहीं है
॥ तातें और कछू न होइगो॥ या प्रकार दोइ श्रुति आप
स में वाद करिके तितरको रूप धरि ठाडी भई सो अने
क काल लौं रही॥ परंतु कछू देख्यो नांही॥ तब मर्यादा
श्रुति को अधिकार जो जामें नांही॥ तातें हारि मानिकें
पाछें फिरि आई और पुष्टि श्रुति ठाडी रही॥ तब आ
काशवानी द्वारा पूर्ण पुरुषोत्तम बोलत भए जो तुम इत
नों श्रम करि क्यों ठाडी रही हो तब पुष्टि श्रुतिनें कही महा
राज हम अक्षरब्रह्म के भीतर जो पदारथ है॥ तिनको
दरसन चाहत हैं॥ तब दयाकरि पूर्ण पुरुषोत्तमनें अ
पनो दर्सन दीयो और कहे यह व्यापि वैकुंठ है॥ तहां
विरजा नदि पर बैठो तुम॥ इहां हमारी लीला को दरस
न होइगो॥ तब पुष्टि श्रुति हुती सो विरजा नदी श्री यमु
ना जी है॥ तिनके किनारे बैठत भई॥ इतने में व्रजभ
क्त घरघरतें शृंगार करि कोउ सोने की गागर कोउ
जडाउ गागरी लें जल भरन के मिस विरजा नदी पर आ

ई॥ सो वडी भीर भई॥ ता समय श्री ठाकुरजी आए सो का
हूकी गागर फोरि काहू की डुरी नदी में डारि दीनी
॥ काहू कों आलिंगन दीनो॥ या प्रकार अनेक लीला
करी॥ पाछें व्रजभक्तन को अंतरध्यान करि आपके
जैं श्री ठाकुरजी पुष्टि श्रुति के निकट आवत भए॥
आइकें कहे॥ तुमनें मेरे भक्तन की लीला देखी मेरे
घर देखे॥ या समान और कछू नांही है॥ तातें में तुम
पर प्रसन्न हो॥ कछू वर मांगो॥ यह श्री ठाकुरजी के व
चन सुनिकें पुष्टि श्रुति रोमरोम प्रफुल्लित होत
भई तब बोलति भई जो हे॥ महाराज हम तुम्हारे भक्त
नके संग जो जादि सके हमको कामिनी भाव होत भयो
॥ तातें हे प्रभु हम पर प्रसंन हो तो यह वर हमको दी
जें॥ जैसें व्रजभक्तन के संग लीला विस्तार उनको
सुख दीनो॥ तैसें हमहूं को मिलिकें रमण करो यह ह
म मांगत हैं॥ यह सुनिकें श्री ठाकुरजी ने कह्यो जो
तुमकुं अबहीं लीला को ज्ञान नाहीं है॥ काहेतें

ऐसा तुम व्रजभक्तनके समान सुष मांग्यो॥ तातें उनकी बराब
२७ रि मेंहूं नांहीं हौं॥ तुमसमानके सेंहौ॥ यह अंतराय भयो जो
व्रजभक्तनके चरनकी दासी होइ मांगते तो अबही लीला
मेंप्राप्त होती॥ तातें में प्रसंन हों तुम यह उपाय करो सा
रस्वत कल्पमें अपने भक्तनसहित ब्रजमें प्रगट होहुंगो
॥ तहां तुमहूं गोपनकी भार्या होउगी तहां सरद रितुमें
रास श्रीवृंदावनमें करेंगे॥ तब तुमहूंकों मुरली द्वारा ह
म बुलावेंगे॥ तातें अब तुम तपस्या करो या प्रकार श्री
ठाकुरजी कहिकें अंतरध्यान भए॥ तब पुलिंदस्त्री तिनहृद
यमें बडो ताप कियो जो हम महा अभागे हैं॥ सो अब भक्त
नकी बराबरि सुष मांगे॥ अब ब्रजभक्तनके चरनकम
लको ध्यान करि तपस्या करन लागी जब सारस्वत कल्प
आयो॥ तब पुलिंदस्त्री गोपभार्या भई॥ तिनकों रासमें
श्रीठाकुरजी अंगीकार कीए॥ मर्यादास्त्री प्रगट भई
सो तिनसों श्रीबलदेवजी रमन कीए॥ या प्रकार स्त्री
तिस्त्री साधन करि सिद्ध भई॥ और अगनकुमारिका

की पहूरी तहें ब्रह्मा जब बेटीके पीछें दोर्यो तब वीर्य
गिर्यो॥ तातें सोरहहजार रिषि प्रगट होत भए॥ सो श्री
ठाकुरजीके मिलनके लीयें तपस्या बहुत कालतों
कीनी॥ सो श्रीरामचंद्रजी वनमें पिताकी आज्ञातें प
धारे॥ तब सोरहहजार रिषिनकों दरसन दिए॥ तब श्री
रामचंद्रजी बोले जो तुमने तपस्या बहुत भारी कीनी है
तातें मनवांछित वर मांगिलेउ॥ तब रिषि बोले जो
महाराज तुम्हारे अंगकी सुंदरता देखिकें हमकों का
मिनी भाव प्रगट होत भयो है॥ तातें हम स्त्री होइ और
तुम हमारे पति होउ॥ हमसों रमण करो यह मांगत हैं
यह बात सुनिकें श्रीरामचंद्रजी बोले जो यह हमारो
अवतार मर्यादाको है॥ तातें एक पत्नीव्रत है॥ यातें
जब सारस्वत कल्प होइगो तब तुम गोडदेसमें कन्या हो
इ प्रगटोगी॥ तब श्रीनंदरायजीके घर जाइकें तुम्हारो म
नोरथ पूर्ण होइगो॥ या प्रकार श्रीरामचंद्रजीके वचन
सुनिकें रिषि फेरि तपस्या करन लागे॥ सो सारस्वत

नि.भा. कल्पमें गोडदेसमें कन्या होइ प्रगटनए ‖ सो श्री नंद
२७८ रायजीके सकदेन अर्थकौ मनजेआए ‖ सो प्रभुके अ
र्थ तिनकन्यानने कात्यायनी दवि के मिस श्री यमु
नाजीको पूजन कीयो तब प्रभु बारहहरन जीजावरीव
रदांन दीए जो हम तुमकों रासमें अंगीकार करेंगे ‖ या प्र
कार अप्रनकुमारिकाको अंगीकार नयोयह पुष्टिमा
र्गीय अंतरंग मन तनके अरथ नित्यसेवाको प्रकारसं
ख्याप्रातलोवर्णन कीए ‖ इतिश्रीमद्वल्लभाभिश्री
गोकुलनाथजीकृत्य नित्यसेवासंग्रह श्रीमा
नासमाप्तिः ‖ ‖ श्रीकृष्णाय नमः ‖ अथ प्रथम
पक्षी भावना लिख्यते ‖ श्री गोवर्द्धनधरके आप
गमें चिन्ह हैं ‖ तिनको भाव मोर सूवा सज्यामंदिर की
अ्रार ‖ मोर श्री स्वामिनीजीके भावलें श्री स्वामिनीजी
कहतहैं मोरकी नाई जितें करा तो मोर जीकों रस प्रा
प्त होइ ‖ अरु चकुरश्री चंद्रावलीजी रूपसज्यामंदिर
रूप निकुंजमें बुलावत हैं ‖ जो चेक कोंने दोय गायहैं ‖

दोऊ जूथ पति श्री स्वामिनीजी श्री चंद्रावलीजी रूप
पास प्रभुके बिराजी हैं दछिन दिस श्री चंद्रावलीजी व
नवंत खंडिताके वचन सुनावत हैं ‖ सोई प्रभूकों अने
क भावरूप टकर मारत हैं ‖ दछिन हस्त पकरिके कहत हैं
अप्रपन श्री अंगके चिन्ह तो देखो अंगराग कहांके हां
लगायो है ‖ नेंकु हमारी ओर देखो क्यो लजात हो ‖ पा
सही में ठाकुरजीके मुखि घरसपी ‖ सो सवरूप सज्या
मंडलरूपादी जो दिखावत हैं ‖ जो ऐसे वचन पालें
सगरी रात तुमारो ध्यान कीयो तुमको ऐसे नचहिए
ए ‖ ठाकुरजीके चरण आसन पास गायती नक्षो यवा
हर प्रगट एक कंदरामें मुख बाहर प्रगट हैं ‖ दाय बाह
रसों ललिता विसाखा प्रभुको बुलाइवे आई हैं कुंजमें
श्री स्वामिनीजी बहुत आतुर हैं ‖ तीसरी गाय श्री स्वा
मिनीजी कुंजते मुख बाहर करि प्रभुको बुलावत हैं ‖ अ
ति विरह तें ‖ कंदरा भीतर एक बाई ओर चलतो सर्प है
सो गिरिराजके दायरूप हैं ‖ सिंहाकार सर्पाकार जहां.

नमः प्रभुकी श्री स्वामिनी जी की इच्छा जा वनमें है ॥ तहां
ग्र० २८ गिरिराजजी सगरे समाजको लेके चलतहे अथवा
बलदेवजी हैं सो स्वरूप तिनको गायनसंग विदावी-
ए हैं सो चले जातहे ॥ तिनके नीचें नृसिंहजी है ॥ सो द्वा
रऊपर सब्यामंदिरकु जो कोई आयनसकें ॥ मर्यादा
चारे ॥ अथवा नंदके घर पधारतहे ॥ तब द्वारपरन
सिंहजी बैठसहें ॥ आधिदैविक नसिंहजी ॥ प्रभुके
बघुनखाते निकसहें ॥ दक्षिन दिस हस्तके ॥ पासस्
पहें ॥ सो श्री चंद्रावलीजी कूं जाजमुणाजलकोंपा
हें ॥ श्री स्वामिनी जी को वंशरूप तामें जल स्वधरा
त प्रभुकों पान करावतहें उज्वल श्री चंद्रावली तातें
पंचामृतमें नित्यराजभोगमें संखोदिक वाको नामा
रके कोने पर स्वरूप ॥१॥ श्री स्वामिनीजी रूप ॥ दक्षिन
के ऊपर कोने ऊपर श्री चंद्रावलीजी को निकुंज नी
चें चरणपास कुमारिकाको निकुंज चारके आस
पास सगरी स्वामिनीके निकुंज ॥ तथा सब्या स्वरूप

खूंटो पीठक तापर श्रीजी नीचें पीठकी लपोट हें ॥
ऊपर आभूषण वस्त्ररूप नत्त हे विपरीत रमणको
भाव ॥ पीठकमें चारो ओर लहरबेल हे ॥ सो श्री प्रभु
नाजी विराजतहे लहर आवतहे ॥ सिखापर जूडा स्वा
मिनी जीनें संवारिके बांधेहें कर्णनासिकामें छेद
असाराजीने करायेहे ॥ कंठमें दुलरी ॥ कंठश्री वन
मालाकंठतें चरणालों जंघा ऊपर गांठ बंधा दिखतहें
श्री हस्तमें कडा श्री स्वामिनी जी आगे हस्त बांधें
श्री ज्ञामेंहें ॥ वस्त्रमें एक सहज कोल नियार सगोप्य
करणार्थ ॥ पहुंची दोउ हस्तमें श्री स्वामिनी जीनें पह
राई हैं ॥ चरणमें घुघरू श्री स्वामिनी जीके भावते ॥ ता
ही ते इहां श्री आचार्यजी सो आज्ञा करि नूपुरके घ
डवाये पहरे ॥ कटिमें किंकिनी विहारमें अनेक बं
धरूप श्री स्वामिनी जीके मनोरथको ॥ वाम हस्त ऊंचो
रासको भाव है कोहलें गोवर्द्धन उठाए हाल लो हस्त
की मुठि बंधी होती एक अंगुरी ऊंची होती इहांतो

यह पांचो अंगुरीसम जिल्यमें ऊंचे हस्तकरि नाव दिखा
२८ वतहें ॥ तथा ऊंचे हाथकरि भक्तकों बुलाए भक्तके
मनखें खिके अपनी दछिन हस्तकी मुठी में करि लो
ए ॥ पाछे कहे जीव ॥ तव भक्त कहें ॥ मेंहमारो मन तु
म्हारे पासहे ॥ सो रहतो जायत ॥ अंगुष्ट दिखाए प
हलेहुं ताते अंगुष्टकों दर्सन होतहे ॥ स्यांम यों दी
भक्तव्रजलाइ द्वादिकहें हमकों व्रजके रसको अनुभव
करावो ॥ तव अंगुष्ट दिखाये जो यह है तुम्हारो जोग
तानांही ॥ तथा प्रभु व्यापि वैकुंठते पधारे हैं सोग
परके भक्त अस्यंत आतुर होइके विनती करते हुए
व लपाकरिके वेगइहां पधारो ॥ तव वंसा हस्त ऊंचे
करिके धीरज देतहें ॥ व दछिन हस्तकी मुठी दीखे
निश्चें हाथ करिके कहे ॥ यह मेरे जीव जो न्वे गारहें
॥ तिनको अपनी मूठी में लें अव आवतहों ॥ प्रभु
को स्यांमस्वरूप यातें है जो अंग अंगमें सगरि स्वा
मिनी की लीला छिन छिनमें जिल्पनो तन होतहें

सो स्यांमस्वरूप महातम रूप उपर करि छिपाए हें ॥ जे
सें महा अप्रधारे ॥ घरमें वस्तु धरीहे ॥ परंतु जानत हो
इ ॥ जाकी धरी होइ सो पावे ताते व्रजभक्तनकों मिलत
हे ॥ जव श्री आचार्यजी श्री गुसांईजी की कृपा होइ
तवहीं पावे ॥ ताहीतें श्री यमुनाजी हूं स्यांमहे ॥ श्री य
मुनाजी में सगरी जीला होतहे ॥ अनेक प्रकार के
अनुभवहें ॥ परंतु उपरतें स्यांमस्वरूप करि आछाद
न कीए हें ॥ तातें सवकों दर्सन नांही तातें श्रीगोव
र्द्धनधर स्यांमहे ॥ पंच दृष्टमें सन्मुख दर्शहो ॥ निज
भक्तनकी ओर देखिरहेहे ॥ असे श्रीगोवर्द्धनधरकों
भजन स्मरण करिये ॥ काहेतें ॥ संसार सुतकल्पके
क्लेस पुर्णपुरषोत्तम हें और कल्पके नांही ॥ संसार
मुलकल्पमें श्री निरूपाकुमारिकाकों अर्थ आपहीं
प्रगटे ॥ कल्पं सारस्वतं प्राप्य व्रजे गोप्या न विर्ष्य
त यामावते और कल्पमें पुर्णलांही मुक्तिदान अ
र्थी भक्तिनांही ॥ कल्पे स्मिन सर्व मुक्त्यर्थ भवती

गूढ़ सिसर्वलि॥ गायत्री बीजरूप वंदध स्वरूप॥ श्री नाग
२२१ वत फलरूप॥ पुष्टि मार्ग तो तथा पुष्टि मार्गीय जी
वको तथा पुष्टि भक्ति को प्रागट्य श्री अंगमें तें है॥
फलरूप॥ तातें फलप्रकरण रास पंचध्यायी में अ
घ हलसन ए तातें अप्र छ हलके स्वरूप की भावना सेवा
कर्त्तव्य हैं अघ हलसा भवती॥ तामें श्री गोवर्द्धनधर के
स्वरूप को व्र कूवरण न कीए॥ अब श्री नवनित प्रि
यजी को वर्णन करत हैं श्रीजी श्री आचार्यजी के ठा
कुर श्री नवनित प्रियजी श्री गुसांईजी के ठाकुर॥ गो
रस्वरूप हैं व्रजभक्तन के स्वरूप की भावना करि के गो
र ह्वै गये हैं॥ गुप्त रस को भाव इनमें विचार सो बाल
वतें निरावृत रहत हैं॥ तातें यां धोती सूथन कछु ध
नी व धू नाहीं पहिरत हैं अ लिरूपा आदि भक्तन को
खिना अ महीं सुरखदेत हैं॥ बाल भावतें गुरजन के आ
गें गोदमें रमाइलेत हैं मुख चुंवन करि हृदय सों लगा
वत हैं॥ काहू की दोष बुद्धि होत नाहीं॥ तातें श्री गुसांई

जी लिखें हैं नानितं परमं तत्त्वं यशोदोत्संगलालि
तं॥ तदन्य दृष्टिस्तिये प्राहुरासुरास्तानहो बुधा ॥१॥ यामें
बतें श्री गुसांईजी के हृदयमें स्थित स्वरूप हैं श्री हस्त
में नवनीत सदा राखत हैं श्री स्वामिनीजी को अधरा
मृत॥ जो सामिग्री जसोदाजी अनेक भक्त देत हैं॥ ति
नको अधरसुधा को संबंध करायके अंगीकार कर
त हैं॥ श्री राधा अधर सुधा बिना कुछ कोई पन ना
नेनी॥ घुटरुणा चलत हैं॥ सो पृथ्वी भक्तरूप हैं ति
नको ताप निवारन करत हैं॥ तथा व्रज श्री स्वामिनीजी
को हृदय कमल हैं॥ तापर घुटरुणलीला करि कें
हृदय को ताप निवारन करत हैं मात चरणके कंक
णमें प्रति बिंब देखि चक्रत होत हैं॥ मणिनके खं
भमें तथा श्री स्वामिनीजी को हृदय को टिकं दर्पन
की नाई॥ तामें अपनपको देखि के चकित होत
हैं॥ या प्रकार सगर व्रज को आनंद देत हैं व्रजभक्त
न चाइके माखन देत हैं॥ टहल प्रभु करत हैं॥ इत्या

गिर दिक भाव श्रीमथुरानाथजीके स्वरूपको भाव॥श्री
२२२ गिरिधरजी श्रीगुसांईजीके बडेलालजी तिनके
ठाकुर है॥सो गिरधरजी गोवर्द्धनरूप है॥ताते श्री
गुसांईजी गोवर्द्धनलाल कहिके पुकारत है॥गोव
र्द्धन सगरे व्रजमे व्है रहे है॥ताते सगरे व्रजको
देवता है सगरी व्रजकी जो जो श्रीमथुरे॥सजी
मे है॥ताते स्याम स्वरूप कहिके श्रीगोवर्द्धन
धरकी नांई छिपाए है चारभुजा है॥ताको भाव
यह है दोय श्रीस्वामिनीजीजी को दोय आपको दोउ स्व
रूप एकमे कहे हर है है॥पंचध्याईमे कहे है जो रास
की नांई विहार मर्यादारूप समुद्र को मे... ताते मर्या
संहननरूप है॥जो वेद दछिन हस्त मे संख है सो ताते ...रूप
ह भाव है असुरनको गर्व निखर्व करनार्थ॥ विसाम्
रोस्या जिन पूरितस्य यस्य ध्वनिर्दानवदर्प्पहंता
॥इति मुख्य भाव पर श्रीस्वामिनीजीकी ग्रीवा आप लते
है॥तथा दछिन नाग श्रीचंद्रावलीजी उज्वलरूप तामे

जलको कूं जो जी एहै॥तथा जलको आधिदैविक स्व
रूप है ताते श्रीयमुनाजी है॥बांम नाग श्रीस्वामिनीजी विरा
जी है॥ताते सब रूप होइ दछिन दिस है श्रीयमुनाजी वा
म दछिन सगरे भाव सो मिलो है॥उपर दछिन हस्त मे प
द्म है सो श्रीस्वामिनीरूप कमल आधिदैविक लक्ष्मी
रूप सो ... भाग ते स्वकिया रसको अनुभव कराइ दछि
ना ते स आप परकिया रसको अनुभव करत है॥यह भाव
विचारो जो उपर इह भवक कमल भुवनात्मक है जाके पुपर
पुष्कमणाचते सो द चौदे है भुवनके भारपरे द विमरे
भुवनात्मार्क कमल मिति॥तथा श्रीस्वामिनीजीके मु
ख कमल रूप है॥प्यारी री वदन कमल तेरो ताते घेरे
ही रहत कमलकर॥इत्यादिक भाव उपर के बाम श्री ह
स्त मे गदा है सो उपर को भाव यह है अप्रख्यतेज निवार
णार्थ॥अप्रख्यतेजस्व गदयाइति॥मुख्य भाव यह है श्री
स्वामिनीजी को दूसरो स्वरूप कुमारिका है॥राधासह
चरायत्नमः॥ताते बाम भाग विराजे है॥गदारूप श्री।

स्वामिनीजी को हस्त सो हस्त पकरे हैं॥ गदा हू छोटि हैं
कुमारिका हू संग रेनके सो वयक रिके छोटी हैं॥ नी
वें वाम हस्त में चक्र है सो उपरको भाव यह है॥ जाको मु
को दनी होइ तिनको चक्र सो मारे॥ जे जे हता चक्र धरे
जराजा नितले गता विष्णुपुरी इति मुख्य भाव यह है
है॥ जासंग रेनकुल में श्रुतिरूपा लेज सखी है॥ तातें श्री
चंद्रावलीजी नाम है॥ वे प्रभाकी अवली को हि कचं
द्र को उज्जियारो लजायमान है॥ सो वाम मार्ग आय
श्री स्वामिनीजी को रासलीला में पधराइवे अर्पे
नु सहित तथा प्रभु श्री स्वामिनीजी निकुंज भवन में
क्रीडा करत हैं तातें तहां उज्जियारो चाहिए सो चंद्रा
वलीजी रूपसी तलरस रूप उज्जियारो यह भाव है
॥ तथा चक्र श्री स्वामिनीजी के भुजमें कंकण है ता
प्राकृत है सो श्री स्वामिनीजी जे कंकण अपनो पह
राया है॥ आरपी ठक गोल है॥ रासमंडल के भावतें
॥ मंडल के मध्य प्रभु मकज सहित अलनक जी जाकर

तहे उपर पाहीते श्री ठाकुरजी हैं॥ सखी जे खेले विपरीत
रमनके भाव श्री ठाकुरजी के॥ श्री अंग में स्वरूप हैं॥ दो
प स्वरूप गाद में दोप स्वरूप कटि में दो प उरस्थल में
दोय ग्रीवा में॥ तिनको भाव यह है॥ चार जूथपति स्वा
मिनी हैं॥ तिनके पास एक एक सखी है॥ उरस्थल में श्री
स्वामिनीजी को भाव सखी सहित॥ कटि में श्रुतिरू
पा सखी या भावके सु लिया॥ गाद में कुमारिका सव
ते छोटी हैं व पमो॥ ग्रीवा में सबके ऊपर श्री यमुना
जी सबको विहार सिद्ध करत हैं॥ या भावतें तथा अ
ष्ट कवि हैं॥ कुंभनदास सूरदास कृष्णदास॥ परमानं
ददास॥ गोविंदस्वामि छीतस्वामि चतुर्भुजदास नं
ददास॥ प्रमुख चारों श्री हस्त में चार कमलके चिन्ह हैं
तिन कमलतें अधरामृत रस अवलक्षिनको पान क
राइके पोषत हैं॥ आठो कविलीला गावत हैं सो गा
न अंगीकार करिके अपने स्वरूप विषें लीन करत हैं
जब श्री ठाकुरजी वन में पधारत हैं॥ तब व्रजभक्त

मधु लागाजकरिकै निर्वाह करत है॥ ताते गुणगानद्वारा
२८५ प्रभुकी लीलावलको सब अनुभव घरवैठेंही देखत
है॥ सो वेणुगीतमें जुगलगीतमें शुकदेवजी वर्णन
कीए॥ और रात्रके सगरी स्वामिनी और प्रभु निकु
जमें लीलाकरत है॥ तब अंतरंग सखानको वियोग
होत है॥ तब विरह करिके अंतरंग सखा निकुंजकी ली
ला अनुभव करि गान करत है॥ सो अत्यंत रहस्य है॥
ताते शुकदेवजी गोप्य रीतसों कहे॥ पाछे श्री आचा
र्यजी श्रीसुबोधिनीजीमें कहे हैं श्री गुसांईजीने [illegible]
में सब खोलिके कहि दीए॥ ताते अष्टसखा [illegible]
अष्टछाप प्रगट होइके सगरी लीला [illegible] करत हैं॥
सुनिके प्रभु अत्यंत प्रसन्न होत है॥ ता नाथ[illegible]
स्वरूप श्री अंगमें है॥ रमणरेतीके आगे एक समय
श्री आचार्यजी प्रभु पधारे॥ सो श्री यमुनाजीके किना
रे संध्यावंदन करत हुते मध्याह्नको ता समय एक करा
रा श्री यमुनाजीमें गिर्यो तामेंते श्री मथुरानाथजी

सात तार ऊंचे ऐसे विराजसरूप तें श्री आचार्यजी
पास आए कहे मेरी सेवा करो॥ तब श्री आचार्यजी क
हे॥ या स्वरूपसों सेवा कैसे होइ॥ तब श्री मथुरानाथ
जी छोटा स्वरूप करि श्री आचार्यजी महाप्रभुकी गो
दमें आय विराजे॥ सो महाप्रभुनें गाठीसों जायल
गे बांधे है॥ तिनहीं स्वरूपमें द्वादसवन सगरे कुंड
गिरिराज श्री यमुनाजी कुंज श्री गोकुल महावन नंद
ग्राम बरसानो॥ इत्यादिक सगरे चिन्ह मथुरामंड
लके है॥ ताते श्री आचार्यजी श्री मथुरानाथजीको
मध्य॥ सो चिन्ह सब पीठिकमें है सो दर्शन दुर्लभ है
श्री विट्ठलनाथजीको स्वरूप॥ पुन: पुलिनमांगल्य
कालिंद्या कूलनावनी इति कालिंदी स्वरूपको दर्श
न कराये॥ तब भक्तनको भगवत्स्वरूप स्फुर्ति भई॥ भगवा
न विरहदशा भाव वृद्धि करालि इति॥ लप्यैव यमुना
स्वामिनि चरणानाखी पदर्सनात्प्रथम श्री स्वामिनीजी
के भावमें आसक्त करिके गारमत॥ पाछे श्री स्वामि

मधु जीजीके स्यामकटाक्ष लागे तातें स्यामरुचि रं
२२५ रंग लागत भई ॥ तातें गौरस्याम जुगल स्वामिनी भावगौ
रस्यस्वरूपं प्रपश्यतः ॥ कटाक्षेः विठले नास्यस्याम
ताश्चित्रे तवपुः ॥ इत्यादिक भावतें ॥ स्यामतासंयोग
रसतेहे ॥ गौरता विप्रयोगरसतेहे ॥ एककालमेंदो
उरसको अनुभवकरतहे ॥ रससिद्धि विधस्यापि
स्वरूपबोधयन स्थिता ॥ एकं विरुद्धधर्माश्रया
रश्यामः ॥ कृपाजलधिः ॥ रसमें मग्नहोइदेहानुसंधा
नभूलिगयेहे ॥ तातें कटिपर ॥ दोउ हस्तधरे ठाढे
॥ सम पदांबुजं सुहस्तं कटिलग्नभुजद्वयं ॥ करौलि
नंजसहंक विठलेश्वरमहं भजे ॥ वामहस्तमें
छेदसहित संखको चिन्हहे ॥ मारीमें जसे छिद्रहो
तहें श्री यमुनाजी याहीतें विराजतहे वाममाग ॥
श्रीस्वामिनीजीके कंकणकत संबंधहे सो अप्रधरस्व
रसको पान श्री यमुनाजी करावतहे ॥ तातें रसमें
उन्मत्त होइ रहेहे ॥ एकचरणारविंदमें आमरन

हें ॥ एकमें नाहीं ताहूकी सुधि नाहींहे ऐसे मग्नहे ॥
॥ सो श्रीगोविंदरायजीके मांथे श्रीगुसांईजी पधरा
ये जब पुत्र कल्याणरायजी को विवाहकी लग्न उत्स्या
पनसमय तब नेत्रभर आए तब श्री गुसांईजी कहे
आयहौ स्यापनकी मारी मेरो प्रभु आसक्तरूप बाल
को आसक्तरूप यह सेवाको ऐश्वर्य प्रगटकी उत्स्या
पनकी मारीको जमहुतो ॥ श्रीद्वारिकानाथजीके
स्वरूपको वर्णन ॥ चतुर्भुज स्वरूप याते ॥ सखी वृंदर
में श्रीस्वामिनीजी विराजतहे ॥ तहांनगवद संबंधी
श्रीठाकुरजीकी सखी पास ठाढीहें ॥ तिनसों श्रीठाकुर
जीकी वार्त्ता करतहें ॥ इतनेमें पीछेतें प्रभु पधारे अ
पनी सखीको संनिधिमें वरजे ॥ वत्ताबाम लिपाछेठाढे
होइके दोउ नेत्र मूंदे तब कोमलहस्त श्रीठाकुरजीके
जाने ॥ तब श्रीठाकुरजी विचार जोमाको जाने ॥ तबदो
यमुना और प्रगट करिके वेणुनाद कीए ॥ तब श्रीस्वा
मिनीजी चकृत भईजो दोय भुजासों प्रभु तो वेणुबजा

वि४ २८६ बलहे ॥ मेरेनेत्र किनमूंदे ॥ तब अपने हस्तसोंपल
करिकै श्री ठाकुरजी के हस्त छोडाय पकरलीए ॥ तब
देखेतोप्रभू मिसिकातहें तबसगरी सखिनमें हास्य
होतभयो ॥ जोप्रभुनेंभले चुकाए ॥ जो वे दछिनहस्त
में पद्म है सोश्री स्वामिनीजी के करकमलहें ॥ नेत्र
मिलनछोडायहस्तपकरे हें ॥ उपरदछिनहस्तमें
॥ गदाहे सोतोश्री स्वामिनीजी के कररूपहे ॥ गलबाहीं
दे दूसरोहस्तपकरे हें ॥ उपरले वामहस्तमें चक्रहें
श्री स्वामिनीजी के कंकणाकृतहें ॥ नीचे बामहस्तमें
संखहे स्वामिनीजी के कंठाकृतहें ॥ तातें संखकी
सग्रीवास्पर्शकरतहें ॥ स्यामसरूपव[illegible]
नमें आछादन करीहें ॥ श्री स्वामिनीजी के भावतें श्री
ठकी आठ हो पीछके चोखुटी मुख्यके हृदयरूपरीत
कों रमण ॥ श्रीबालकृस्नजीके मांथें पधराये ॥ ईल
में वीर्ये यह श्री आचार्यजीके भाई ॥ दछिनतें श्रीगो
कुल आये श्रीगुसांईजीसों कहे ॥ मेरे संतान नांहीं है

श्रीबालकृस्नजीको मांको देहु मेरी बलवहुतहे ॥ सोईं
नकुंदेहु में संन्यासलीएहों ॥ नांहीं करोगे तो रिणहोइ
गो ॥ तब श्री गुसांईजी कहे ॥ जाइ लावै जाव ॥ तबश्री बा
लकृस्नजीसों आयकहीं मेरे संग चलो नांहीं तो रिण
होइगो ॥ तबश्रीबालकृस्नजी नेंकही रिणहोइगो तो
परदेसजाइंगे जो बनको गद्धारहोइगो ॥ भक्तिमार्गको
विस्तारहोइगो तुम जावतब फिरिगये ॥ औसे सेवा
में सत्पुरिसलीए परंतु संगल गए ओर श्रीबाल
कृस्नजीके नेत्र औसे विसाल स्त्री देखिके मुर्छि
तहोइ जाइ ॥ जब श्रीजीके अलंकार सवराये तबश्री
बालकृस्नजीके नेत्रकमलदेखके ॥ यह वीर्यतें सही
श्रीद्वारिकानाथजी हे ॥ अब श्री गोकुलनाथजीको
स्वरूप गोवर्द्धनयईऊठाएहे ॥ जब प्रभु पधारे तबदा
सको यह धर्म हे ॥ जोउठिनठाहोइ ॥ सोप्रभुकी इछा
जो निसगरे व्रजमें छत्रकारहे गये तबश्री गोवर्द्ध
नकी उपमां वडाई देन सूर्य छत्र मेंडाइचाहे एसो

विठ्ठ प्रथम वामहस्त उपर पाछे दक्षिन हस्तकी अंगु
२८७ री पर राखे ॥ वामहस्तमें ढिलाछिद्र कोसख हे ॥ सो
मजलको आधिदैविक हे ॥ तातें सगरे जजको आव
र्तन करि लीयो तथा अंनकुंभमें सामिग्री बहुत आरो
गे जल च हे ए सोई द्रवरूपो तब मुख्यके कंठलत
संखमें ले अधरामृतको संबंध कराय पान कीए ॥
ताहीतें वाम भाग भारी धरत हें सो संखवाम आरहे
हें इन सगरो परिकर नेत्रनको पोताने इंद्रके उपर
संतभए ॥ ब्रह्मा गाय बछरा ग्वाल इनतें न्यारे कीरता
तें ब्रह्मा पर प्रसंन भए ॥ दोइहस्त सों वे ए ल्हाद कुरस
नको रससों पोषण कीए तातें सात दिन भातको खव
र काहूं कौन परी न भूख लागी न प्यास लागी सुखरूपा
सवाधक नया ॥ कमल पर ठाढे हें कमलरूप ब्रज है स
हस्त्र पखुरीको सगरे ब्रजके ताप हरे ॥ सगरे ब्रजके
भक्तको अपनी सरन राखे यह जस प्रगट कीए ॥ ता
हीतें श्री गुसांईजी श्री गोकुलनाथजीको वर्नन करे हें

तें तिनहूंको जलरूप हे ॥ तातें श्री गोकुलनाथजी मा श्री
थे पधराए ॥ श्री गोकुलनाथजी गोरसरूप हे ॥ सो यातें
॥ जादिनतें प्रगट ता दिनतें श्री स्वामिनीजी की आ
रु श्री चंद्रावलजी की रछामें तत्पर हें ॥ सो जब गोवर्द्धन
धरके आल्हाद करसों मंत्ररूप सगरे ॥ गुरुजन मोहित कीए
ये ॥ तब दोउ स्वामिनी सात दिन रात एक रस अपने र
सको अनुभव कराए तातें दोउ ओरके भावतें गोरद्ध
न पें सात दोउ ओर स्वामिनी विराजत हें छिनताहीं
क्रीडत हें और श्री गोकुलनाथजीको जस जगतमें प्र
सिद्ध हे ॥ माला रासी जगतमें जस विस्तार श्री गोकुल
चंद्रमाजीके स्वरूप साक्षात मन्मथमन्मथ कोटि कंद
र्प लावण्य ललित त्रिभंग ग्रंथ इनही पर हे ॥ चरण कटि
ग्रीवा तीन अंग टेढे हें ॥ वामचरणको स्थापन दछिन
चरण उन्नत पुष्टिको स्थापन मर्यादाको उल्लंघन ॥ र
च अंगुरीको अस्थित हें ॥ सो पुष्टिके आश्रित मर्यादा
हे ॥ पुष्टिनकि स्थिरता कल्प मर्यादा जब तदा श्रितां इति प्र

हे श्री ब्रा याते रस भरो पात्र होइ जब ठठो करिये तब
दूसरे पात्र में आवे ॥ सो व्रजभक्तन को देनो है ताते ठ
ठोरी एहे ॥ रस भरभरी तें पात्र न मितम न्यत्र तें रस भरते
इति ॥ श्री हस्त में वेणु है सो बजावत है ॥ भक्तन सो कहत
हुत काल लों तुम्हारो मन जन करि एन पारये है तउ त्रधि
ग जाहीं अगुरी ग ठी है सो नृत्य को नाव ह थेरी को दर्स
न ॥ सो भक्तन को जिर्न य करत है ॥ अब चिंतामति करो
अब तुम्हारे ॥ पासते एक छला कहूं न जाउगो ॥ दा ब्रह्म
छिन परा वत होइ ने मित्र करूप तिन पर कृपा करता
न है ॥ पांच प्रकार को दूध पांच प्रकार को वेणु ना दसी
मे दूहत छिन है ॥ ई स्त्री पुरुष सबन को सुख उहे धरा
उचे देव ताको मोहनो वे पलाव तथा भूमि सब वस
बको ॥ वामम मुख्य स्वामिनी अपर्ण ॥ दछिन श्री ललिता दि
अंतरंग सखी दछिन श्री हस्त में बाजूबंद ताहीं बाम में
है ॥ एक श्री स्वामिनी जी पुछिन तिसो व घेरहे ॥ संहा
सन पर पठे है भक्तन के हृदय रूप दोउ और कहितां

इ तरिक पाहे ॥ आलंबन भाव उद्दीपन भाव है श्री गोकुल
में श्री आचार्य जी को ब्रह्म संबंध भयो ॥ आज्ञा याही स्वरूप
सो दीनी ॥ ताते श्री आचार्य जी मधुराष्टक याही स्वरूप
सो कीने मधुरते मधुर मिश्री भोग धरे ॥ मधुराधिपति
है ताहीं ते श्री गुसांई जी निवेदन को भाव ललित त्रि
भंगाय कहे है नमः ॥ प्रपल पदाभोजरेणुभ्यो य स्त्रि वेद
बात ॥ अस म तुलं लि कुन्तक श्री हस्ते नात्मा सो तक
तं स्त्री मस स्वरूप पाल भक्तन के जूथ में विराजेंगे ॥ अने
क जो ला पंच अध्याई की ता रस गोपकर नार्थ श्री रघु
नाथ जी में श्री है ॥ परम सौंदर्य ताते दोउ स्वरूप एक भा
व के ॥ जब श्री रघुनाथ जी को व्याह भयो ॥ ताही दीन
तुलसी दास आय श्री गुसांई जी सो विनती कीया ॥ आ
पके घर श्री रघुनाथ जी जानकी जी है ॥ सो में दर्सन पाउ
॥ तब श्री गुसांई जी कहे ॥ तुम्हारो अनन्य भक्त आयो है ॥
दर्सन देहु ॥ तब जानकी जी सहित दर्सन दीए ॥ और दी
वारी की रात श्री जी के हां आठ आरती होत है ॥ सो ताको

गोकु रवोप्रथमश्रीजीकोजबश्रीरघुनाथजीकोवागो
२८ आवे॥तबगदरप्रथमहीअपनेमनोरथकोआग
इकेआरतीहोइ॥तातेप्रथमगदलश्रीरघुनाथजी
कोधरतहे॥सोअन्नकूटकेदिनसंगनामेंहूयहीग
दलधरे॥अत्यंतकोमलसकुमारहेतातेश्रीजीदी
रआदिकतिनसोंतिग्रीश्रीरामाजीकहानाहीं॥य
हूआकहे॥औरमध्यकाधजंघामेंखिन्नहे॥औ
रमलकाधरकोशृंगारबहुतश्रमपहे॥वाहेलेमध्य
काधरके॥शृंगारतेव्रजभक्तनकेमनमेयहांअभि
पभयोजोनिकुंजमेंकुस्तीलरंगेतामसोंमनको
मानमर्दनकरनाथे॥औरचंद्रकावामभागकोश्री
स्वामिनीजीपरछायाकरतहेधरकीबाई॥श्री
मदनमोहनजीकोसरूप॥वेणुनादकरिरासपंच
ध्याईमेंबुलाएहे॥पाछेगोपवचनचारीसोबोले
सोभक्तवचनचातुरीप्रथमसमुझेनाहींसोमहा
खिलाहोतमई॥हमकोबुलाइकेअवकहांत्या

गकरेंगे॥पाछेसर्वांगगोरखवस्त्रदेखेतबएकनेक
हीखिंतामलिकरोहमारेमेप्रीतबहुतहे॥हमारोप्रे
मविरहकरिहमारारूपजेभावमेमगनहे॥तातेसर्व
थात्यागनकरेंगे॥तापाछेचरणारविंदमें॥पादुका
कोदर्शननयो॥तबएकसखीफेरिबोलीजोहमा
रेमवालनाहीहे॥हमसगरीभूमिपरनटीहे॥आपु
पादुकापरहे॥तातेइनलोकहूसंबंधनाहीराखेभूमिहू
तेंन्यारेहे॥तबफेरिखिंतामईतबएकसखीफेरि
बोलीखिंतामलिकरो॥नंदरायजीकेघरमेंजासी
तकालमें॥तथाउसकालमेंचंदनअंगरागचरण
मेंलगावतहे॥तबचरणपरसकहामोजाअंगराग
जडेकरिकेकरतहे॥ऊपरहीकरतहे॥रसकेसंबंध
तेंरससरूपहोइ॥तातेंचरणकेपरसतेंअंगरागमो
जाहूचरणारूपहोतहे॥तातेंचरणकेपरसतें॥पादु
काचरणरूपहे॥तातेबडेबडेभगवदीयचरणकी
पादुकाकोपूजनकरतहे तातेंपादुकाकेऊपरकोखिंता

गोकुलनाहीं पादुकारूपसिं परहे ताकरिके हमारो संबंध द्रढ
२८ हैं ॥ मूर्तिमन्तरूप हैं हम हूं भक्त है ॥ यह सुनिके सगरो प्र
संन भई ॥ दक्षिण चरणारविंदको परस मात्र पादुका
को है ॥ ऐसे चरणको देखि ॥ दास्यरूप मर्यादा भक्ति
सिद्ध भई ॥ ताकरिके ॥ मुखारविंदको दर्शन भयो
तब मुखपुष्टि भक्ति अधरामृत संबंध भई ॥ ताक
रिके चतुर्थ मुक्ति तु यहै ॥ अब जलावृत मुख देख
के ॥ सारूप्य मुक्ति की प्राप्ति जो अब जब सो मुखरूप
भक्तिको आश्रय करत है ॥ तातें सारूप्य मुक्ति [illegible]
के कहा कुंडल सारूप्य मागरूप सामीप्य भक्ति रूप
हैं ॥ जदिप मुख कपोलके निकट है ॥ मुखरूप
भक्तिके आश्रित हैं ॥ कर्णके आश्रित हैं ॥ तातें सा
मीप्य मुक्ति तें कहा ॥ सालोक्य मुक्ति में अधरानंद
अनुभव है ॥ सो अधरामृत आनंदरूपी रसके आगे
तु यहै ॥ तातें सालोक्य मुक्ति तें कहा ॥ सायुज्य रूप
जलरूप जलमें जल मिल्यो रसानुभव नाहीं तातें

सायुज्य मुक्ति तु यहै ॥ तातें पंच अध्याई में कहे वीर्या
जलावृत मुख इति ॥ ऐसो भक्तजनको भाव देखि आ
त्माराम हुते सो हू रमण करत भए ये स्वरूप श्री घ
नस्याम जीके माथे पधराए ॥ का है ते बैराग्यको
सरूप है बैराग्य विरहके ॥ यह रस प्राप्ति है ॥ सो श्री
मदनमोहनजी अंतरध्यान भए तब सगरो सुख
व्याधि ॥ श्री अंगके चिन्ह अपने अंगमें लिख्यो
सब ते ऐसी तन्मयता भई ॥ और मधुराष्टककी
टीका रसरूप इन्हीं के अनुभव अर्थ ॥ ताहीतें
दूसरे बहू जी तें श्री घनस्याम जी प्रगटे विरहकी
सो मिश्री न्यारी है ॥ श्री जदुनाथजीके माथे श्री बा
लकृष्णजी पधारत हुते ॥ सो जनजी एकाहेते ज्ञानको स्व
रूप है ॥ जो हमारे सगरे ठाकुर हैं श्री जी सात सरूप तातें म
हलमें जाय मंदिर वस्त्र देत है ॥ ज्ञानमें दास भाव नाहीं ॥
॥ ताहीतें श्री गुसांईजी सात सरूपमें नाहीं दीए ॥ मुख्य स्व
रूप आठ है ॥ षोडस गोपिकाबाम मध्ये अष्ट सखा मवं

गोकु लश्रीजीसातसरूप॥ श्रीबालकृसनजीश्री द्वारिकानाथ
२८१ जीकेगोदकेठाकुरहे॥ तातेंअंनकूटमेंश्रीजी द्वारिका
नाथजीकेपासआपोमें पधारे॥ न्यारोपालनो नाहीं
॥ एकसमयश्री गुसांईजी गिरिराज पधारे तबता
दिन श्रीगोवर्द्धनधरके हांसामग्री बनहुती॥ सोरा
मदासजी देहलोग धरेहुते॥ पाछेश्री गुसांईजीनेंप्रमा
नबांध्यो॥ मंगलाभोगकी सामिग्री श्री गिरिधरजी॥ गो
पीवल्लभश्रीगोविंदरायजी॥ ग्वालश्री रघुनाथजी॥
राजभोग श्रीगोकुलनाथजी॥ उत्थापन श्री बालकृसनजी
संध्याभोगश्री जदुनाथजी॥ सेनश्री घनस्यामजी॥ रा
गहूं याहीभांति॥ स्वेतश्री गिरिधरजी॥ लालश्री गोविंद
रायजी॥ स्यामश्री बालकृसनजी पीराश्री गोकुलनाथजी
॥ हराश्री रघुनाथजी॥ मलयामृतवारके श्री जदुनाथजी
॥ काथकेवांसके छबरा दि श्री घनस्यामजी॥ मुकट
कोश्रृंगार॥ कृसनदास॥ गहरपरबनघना आसिमें रहे पा
रागोविंदस्वामिकदमखंडीके॥ ३॥ परमानंददासजी उप

जनके॥ ४॥ कुंभनदासजी निकुंजके॥ ५॥ पागसूर
दासजीसगरेव्रजके बनउपवनादि॥ ६॥ ग्वालपगापर
मानंददास॥ घाटीके॥ ७॥ सेहरा चतुर्भुजदासकंदराके
सरहदीके॥ ८॥ दुमाला छीतस्वामीश्री यमुनाजीकेमे
कोपर्ती कुंडसरोवरके॥ ८॥ टोपी बालजी लाश्री यसो
दाजीकेमनोर्थसे गुरवारको पीतश्री स्वामि
नीजीसगरेभक्तनके गुरहें॥ पुष्टिमार्गमें इनके हाथप्रभु
हैं॥ शुक्रको स्वेतश्री चंद्रावलीजी कोदोयभाव स्वामि
नीतथा जुगलस्वरूपकीसेवा अर्थदासभाव निरवि
कार उज्वलताते सोमवारकोहू स्वेत रविमंगललाल
अनुरागरूप ललितादिकसखीके रविवार दूती आदि
कोमंगला सनिश्चरको स्याम श्री यमुनाजीकेभावते
एकरसदासभाव॥ बुधकोहरोकुमारिका जुगलसरूपके
रसमेंमगन॥ याप्रकार वारको तात्पर्य है॥ वस्त्रश्री
भरलकोभावकुलह जसबाग श्रीस्वामिनीजीकोमनो
र्थ॥ टीपाराश्री ललितापांकोमनोर्थ॥ सेहराकुमारिका

सात कोमनोरथ स्याहकीए ॥ ग्वालपगा ग्वालनको मनो
२९२ र्थ ॥ मुकटरसदान करनार्थ ॥ टोपी जसोदाजीकोम
नोर्थ ॥ चीरा श्रीयमुनाजीकोमनोर्थ ॥ ताननयांप
दनी कुघाडोरस ॥ चोली सूथन छिप्योरस पिछो
रा श्रीस्वामिनीजीकी ग्तरी ॥ का धनी जहंगाकोघेर
॥ पटुका श्रीस्वामिनीजीके लहंगा उपरनेपा चुना
व लहंगाकोताके उपर ॥ सूथन श्रीस्वामिनीजीकी चो
ली ॥ उत्सवके दिन अभ्यंग श्रृंगार सामग्री श्रीस्वा
मिनीजीके मनोर्थकी ॥ जलपनोतन अप्रारती मि
नी सखीकोंव मनोर्थ श्रीस्वामिनीजी धराये ॥ कुं
जस्वरूपके श्रृंगारमें श्रीचंद्रावलीजी कुमारिकास
खि अप्रादि श्रीयमुनाजी सबमें ॥ सागघर [illegible]ज
की कंदरा साधंगाघरके द्वारपर पुलिंदीजीकोंसमरण
सागघर कुचले प्रगट्यो ॥ फूलघरा श्रीस्वामिनीजीकी
ना सिकाके सुगंधतें प्रगट्यो खासा भंडार ललिताजी
को कुच उदरतें ॥ प्रगट्यो रसोईघर सखडीके छिकां

नै श्रुतिरूपा ॥ अनसखडी कुमारिका ॥ ततहरा श्रीय
मुनाजी रतनचोक कुचके मध्य ॥ कमलचोक व्रजम
ध्य मंजूस श्रीयमुनाजीकी पुलिन ॥ पांनस्वामिनी
जीको कपोल सुपारी कुमारिकाकों कुच ॥ चूना श्रुति
रूपाकेनेन ॥ खेर जमुनाजीको अधर ॥ पनजोरीकोमा
व श्रीराश्रुतिरूपासोंकुमारिका ॥ व्रजवाई ललि
तासो विसाखा ॥ यलयांस मस्त सखी घी श्रीस्वा
मिनीजीकों स्नेह बूरा अधरामृत तथा श्रीयमुना
जी मिरचसी लकार ॥ धुटी बूंदी कुमारिकाके कुच
॥ बूंदीके लडुवा स्वामिनीजीके नातें उत्सवमें मुख्य
॥ सबके लडुवा चूंनके मगदके दोउ श्रीचंद्रावलीजी
के ॥ वेसनके कुमारिकाके ॥ धोसके श्रीयमुनाजीके
अद्भु बेसनके ललिताजीके चिहुटियाके दूती श्रा
दिके ॥ दुलासके श्रीचंद्रावलीजीके खाजाके ॥ यमुना
जीके बीजके कुमारिकाके ॥ सूरणके श्रीयमुनाजी
के मनोहर श्रुतिरूपाके ॥ घी स्नेह बूरा अधरामृत

वस्त्र
२६३

सो बाघे मुगंध श्री अंगको ॥ घेवर श्रुतिरूपाको
उरस्थल ॥ बावर श्री यमुनाजी को उरस्थल ॥ ज
लेबी श्रुतिरूपाके अधर ॥ गूंझा श्री स्वामिनीजीके
उर कपूरावंतरूप ॥ लपाकंठ कगूंझा आभूषण ॥ मे
वाती गूंझा श्री यमुनाजी को मुख ॥ मेवाती लडुवा श्री य
मुनाजीके कुच ॥ खनमंडा श्री स्वामिनीजी को उदर
चारखूंटो ॥ पपची कुंमारिकाके कपोल ॥ कपूरनाडी
श्री स्वामिनीजी को उरस्थल चार लोग चार लनो ॥ पू
री फूली श्री स्वामिनीजी को मुख खत फेणी श्रुति
रूपाके मुखलकी रनख धत दंत धत सा ॥ श्री
यमुनाजीके कपोल ॥ दहीवडा श्रुतिरूपाके कपोल
॥ माखजवडा स्वामिनी जीके कपोल खीरवडा कुं
मारिकाके कपोल ॥ उपरेठा श्रुतिरूपाके हृदय चंद्र
कला श्री स्वामिनीजी को कपोल ॥ ईदरसा श्री यमुना
जीके कपोल दोना जगपो दंड धत ॥ सखरनवडी
श्री यमुनाजी ॥ देहरवडी श्रुतिरूपा ॥ पूवा अनुराग

जोबनाके कपोल ॥ मालपूवा दूतीके कपोल दूधपूवा
श्री यमुनाजीके कपोल ॥ तवापूरी श्री स्वामिनीजी को हृद
य ॥ तिलगुडके लडुवा श्री यमुनाजीके कुच ॥ चकुली श्रु
तिरूपाके अधर ॥ अदरखपाक अनुराग जोबनाको रस
॥ ननगली कुमारिकाको अधर खंडन मिरचसी तकार ॥ लि
सपुरी सखनको रस ॥ टवरी दूतीको रस ॥ चांवरकी खी
र कुमारिकाको अधरामृत ॥ मलिकाकी खीर श्री स्वामि
नीजी को अधरामृत ॥ संगावकी खीर श्रुतिरूपाको अध
रामृत ॥ सवकी खीर श्री यमुनाजी को अधरामृत मखाना
की खीर सखिआदि ॥ तवाखीर श्री यमुनाजी ॥ दूधवरा श्री
स्वामिनीजीके कपोल गुलगुला श्री यमुनाजीके कुच
॥ ठोरवडो श्री स्वामिनी जी को कपोल मठरी कुमारिकाके मा
ठ श्रुतिरूपाके ॥ गेंहूंकी पूरी कुमारिकाको हृदय ॥ मेदाकी
श्रुतिरूपा ॥ बेसनकी कुमारिका ॥ दूधपूरी स्वामिनीजी
के कपोल ॥ गेंहूंको माहन भोग कुमारिकाको उदर ॥ मेदाको
श्रुतिरूपाको ॥ बेसनको श्री स्वामिनीजी को ॥ चांवरको

सामि कुमारिकाको ॥ सांटको श्री यमुनाजी को अधर रस को
२८४ श्री स्वामिनीजी के उरज ॥ बाट यमुनाजी ॥ पकवान श्री
स्वामिनीजी के कपोल ॥ सकरपारा श्री स्वामिनीजी के
नेत्र ॥ पपडी लोनकी अग्रात चोवनाके मुख ॥ दीवडा
स्वामिनीजी के करतल ॥ खुरस्वा श्री यमुनाजी के कुच
खारको गूझा श्री स्वामिनीजी को मुख ॥ खोवाको गूझा
श्रुतिरूपा ॥ बरफी श्री स्वामिनीजी को मस्तक ॥ वासोंधी
मलाई श्री स्वामिनीजी को अधरामृत ॥ घेवर श्रुति
पाको अधरामृत ॥ मीठी कचोरी श्री स्वामिनीजी के
कपोल ॥ फीकी कचोरी श्रुतिरूपाको कपोल ॥ खोवा
की कचोरी श्री यमुनाजी के कपोल ॥ खोवाको गु
लकंद श्री स्वामिनीजी को रस ॥ सेवती के गुलकंद श्रु
तिरूपाको ॥ बेसनके बरा श्री स्वामिनीजी उरजके बरा
श्री यमुनाजी ॥ पेडा मुख्यको चाटी गुझिया मुखतखो
खोवा श्रुतिरूपाको अधरामृत ॥ सिखरन श्री यमुना
जी को अधरामृत दूध श्री स्वामिनीजी को अधराम

त दूध श्री स्वामिनीजी को अधरामृत दही श्रुतिरूपाको
अधरामृत ॥ गुलाब पाक स्वामिनीजी को रस बादाम पा
क कुमारिकाको रस ॥ आंबको विजसार श्रुतिरूपा ॥
करोंदाको कुमारिका ॥ आंबराको सखीजन छोहारको
मुख्यको ॥ नारंगी को श्री यमुनाजी सुहारी राजसी को
॥ कुमारिका तामसी ॥ गुरकी सातुकी के अधर ॥ गुडपाप
सखीजन ॥ मुरमुरा कुमारिकाके अधरखंडन ॥ चर
नासुके लोन मिरचके मुख्यको अधरखंडन मिरच
सीतकार ॥ माडा स्वामिनीजी को अधरामृत ॥ सेवबू
राकी वेसनकी लोनकी मुख्यको अधरामृत ॥ नारि
यर श्रुतिरूपाके कुच संजोगसमय ॥ बवातरा श्रुतिरू
पाके कुचमोजनसमय ॥ खरबूजा श्रुतिरूपाके कुच विहार
समय ॥ फल श्रुतिरूपाके कुच विहार पीछे सुपारी कु
मारिकाके कुच संजोगसमय ॥ जांबु कुमारिकाके कुच
मोजनसमय ॥ बेर कुमारिकाके कुच विहारसमय ॥ कसे
रु कुमारिकाके कुच विहार पीछे श्री फल श्री स्वामि

सामिनीजीकेकुचसंयोगसमय॥जारंगीस्वामिनीजीके
२८५ कुचविहारसमय॥ केलाश्रीस्वामिनीजीकेकुच
विहारपीछे॥दाखश्रीयमुनाजीकेकुचविहारसमय
मुनक्कादाख॥जामुनश्रीयमुनाजीकेकुचविहारपी
छे॥ईहांमानजाहीसदांहीसंयोग॥जलसुगंधसहि
तप्रभुआरोगतहैं॥सोश्रीयमुनाजीकोअधररस॥च
टहरसखीकेकुचजुगलसरूपकेविप्रयोगसमय
ककडीदूतीकेकुचजुगलसरूपकेमिलनसमय॥
हाराश्रीयमुनाजीकेकुचश्रृंगारसमे॥सेवअज्ञात
जोवनाकेकुचसंयोगसमय॥अमरूतअज्ञातयौ
वनाकेकुचविहारसमय॥सिंघाडाज्ञातजोवनाके
कुचसंयोगसमय॥कमरखज्ञातजोवनाकेकुचवि
हारसमय॥बडहरज्ञातजोवनाकेकुचविहारपीछें
॥तूतश्रीस्वामिनीजीकीरसना॥मखानाश्रीस्वा
मिनीजीकेदंतप्रातसमय॥दाडिममुग्धकेदंतश्रृंगा
रसमय॥चिरोंजीमुग्धकेदंतविहारसमय॥बदाम

अतिरूपाकेदंतश्रृंगारसमय॥जायफलअतिरूपाके
दंतविहारसमय॥मिरचअज्ञातजोवनाकेदंतश्रृंगा
रसमय॥लोंगअज्ञातयोवनाकेदंतविहारसमय॥
एलाचीकुमारिकाकेदंतश्रृंगारसमय॥किसमिसकु
मारिकाकेदंतविहारसमय॥कपूरअतिरूपाकोसुं
गंध॥गुलाबजलश्रीस्वामिनीजीकोअधरामृतवि
प्रयोगसमयतप्तापसीना॥श्रमजल॥मोहनभातश्री
स्वामिनीजीकोअधरामृत॥सिखरनभातश्रीयमुना
जी॥दहीभातअतिरूपा॥बांवरकोभातअतिरूपाको
हास्य॥खाटोभातकुमारिकाकोअधरामृत॥पीरोभात
मुग्धकोरस॥बेंगनभात॥वडीभातदोऊश्रीयमुनाजी
चनाकीदारमुग्धकेभाव॥उरदकीश्रीयमुनाजीमृग
कीकुमारिका॥तुवरकीअतिरूपा॥मोठसखीजनकी
सास्वामिनीकेआगेबाराबाराहीआवत॥तातेमूंगमेलें
मोठचीननोनाहीं यहसातमंदिरमें॥श्रीजीकेइहांबि
नतहैं॥तेसैहीगेहूमुग्धजवसखीजनसातमंदिरमें

सां भ जवनवीजें श्रीजी केवीने ॥ रादी राजसी के जो टी॰
२६ई मांटी तांमसी के ॥ खिचरी सातुकी के ॥ सत पुडी अखिल
पाके ॥ अंमृत पाक मुख्य को रस ॥ जछिके बडा मुख्य
संयोग ॥ राईता अखिल रूपा को संयोग राई सीतकार ॥ क
ढी सखी जनतातें उत्सव में नाहीं ॥ तिन बूडा चारा को
सीतकार ॥ तरमेवा मुख्य को संयोग रस ॥ सुरवे मेवा
विप्रयोग समय मुख्य को रस साक संयोग मुख्य को र
स अथाणो मुख्य को वियोग रस ॥ पापड संयो
ग ॥ आदा पांचरी वियोग पूजो तासंयोग ॥ [illegible]
योग ॥ मंगनसाक संयोग ॥ सुगारी वियोग ॥ [illegible] को रस
संयोग को अधरामृत ॥ फलादिक [illegible] पीधे अनु
पान ॥ गोपी वस्त्र नके थारमें सोरह कटोरी छोटे वडे
चमचा राजभोग में सोरह वेला चमचा सोने रूपके ॥
सात में दिरमें आठ आठ ॥ द्वद्व गोपी के भावते ॥ अर
वस्त्र न कुलवके हा चारव्रज जितने तितने प्रभु ॥ वे स
बके हारा जसे बाहाइतो नगवा[illegible]साक को अखिल रूपा॰

कुमारिका ॥ यार श्री स्वामिनीजी के हृदय चमचा सें
नेके कर ॥ रूपके थार अखिल रूपाको हृदय चमचा कर
॥ वडे पात्र रूपे के ॥ अखिल रूपा छोटे कुमारिका ॥ वडे जा
डे अखिल रूपा छोटे कुमारिका प्यारी श्री यमुनाजी ॥ सिंहा
सन ललिताजी को गोद ॥ बुहारी सगरी स्वामिनी के अ
[illegible] श्री स्वामिनीजी को कर ॥ ईख को रस प्रबोध॰
नी से डोल ताई गुड प्रबोधनी तें डोलताई ॥ उत्सव में सां
मग्री चार ॥ सब ॥ १ ॥ पठा को मीठे साक ॥ २ घी छिके वडी
३ ॥ तिन कुंडा ध ॥ अन सखडी में बूंदी सकर पारा मेवा
तो सेव के लडुवा ॥ बादाम पाक पिस्ता पाक जौग पाक
जायफल पाक ॥ सूरन पाक पेठा पाक ॥ गुलाब पाक
नारियर की गरी पाक सेवती पाक द्वादशी अमावस को
श्रावण घरियें नवजलो चूंनको सब सो राजरिए
रविमंगल द्वादसी अमावस खिचरी नाहीं ॥ अथ
जपको प्रकार लिख्यते ॥ उत्तही माला जने उसमा
रनो ॥ जनेउ वार को माला आवस्य चाहिए ॥ माला वा

सां॰मि॰ र्कों जनेउकी अपेक्षा नांही ॥ काहेतें जनेउ देहसंबं
२६ धी है ॥ माला आत्मसंबंधी है ॥ जनेउ ब्राह्मणतें औ
र जन्ममें होन जात होइ तोन पहिरे देहपर्यंत ॥ माला
भगवद्धर्म सबवर्णकों अधिकार याहीतें जनेउकु
छ्रोकां मनाही आवे ॥ माला टूटे मणिया काठ गांठ दे
जीजे चिंता नांही ॥ जैसें गंगाजल धारातें छूटि आग
गाज कहावे पापरूप ॥ श्रीयमुनाजल गायके खुरमें
रहे इतनोहू पवित्र ॥ तैसें जनेउ मालाको देसवे स्व
कों करि पाछे श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी कों अप
ने गुरुके स्वरूपकों हियमें चिंतवन करि दंडवत करि
वचनामृत लेत जे [illegible] ॥ देहकृत्य करि [illegible] तिलक
करि जप करिए भगवद्सेवा होइ तो राजभोग धरिके
जप करिये तहां श्रीआचार्यजीको स्वरूप विचारि
ए मुख्य श्रीस्वामिनीजी रूप ॥ वेणुके मध्य रससंयोग
रस वियोग दोऊरूप श्रीगुसांईजी वेणुरूप श्रीचंद्राव
लीजी वेणुमें सात छिद्र सातों बालक ॥ तामें श्रीगि

रिधरजी जहां अधर धरत हैं धर्मीरूप छेहधर्मी ॥ श्री
जी सात सरूप मेले अंगुष्ट कों मनोरथ यह श्रेष्ठ
र्यो ॥ वीर्य यह खिरन मंडलमें वादी है बेठे जस यह
श्रीजी हाथ पकरे श्री यह श्रीजीके उत्सवको शृंगार
आदि ॥ लालगोपालमंत्रको साखी कार ॥ वैराग्य
नो स्वरूप पालाडवाई धाडवाईके त्यागको ए ॥
॥ छेहबालकमें छेहधर्म वेणुमें अलंकरागराग
नी सार वल्लभकुल ॥ वे सब सखीजन तातें दामो
दरदासको प्रथम स्मरण करि अष्टछापकों याप्र
कार करिए ॥ गिरिराजमें द्वार ८ ॥ बिलछू सन्मुख खि
रकी तहां कृष्णदास ताद्वारा रासको पधारत हैं ॥ मानर
सीगंगापर द्वार एक तहां नंददास आन्योरपर द्वार ए
क ता सन्मुख जमुनावतो तहां कुंभनदास ॥ गोविंदकु
डपर द्वार एक ॥ ता सन्मुख परासोली तहां सूरदास
॥ अपछराकुंडपर द्वार एक तहां छीतस्वामी ॥ सुर
भीकुंडपर द्वार एक तहां परमानंददास गोविंदस्वामि

जप मीकोकदमखंडीपरद्वारएकतहांगोविंदस्वामि
२८ रूद्रकुंडपरद्वारएकतहांचतुर्भुजदास याप्रकार
भावनाकरि॥ जैसेवको आश्रयकरिनीतर आइ
अपने गुरुकोतहांभावसहितदंडोतकरि गुरु
कौ आश्रयकरिदर्सनसेवासबकरे॥ जैसामनो
र्थहोइतैसोश्रृंगारवागा सांमिग्रीश्रीस्वामिनी
जीकेभावतेकरे॥ गोमुखीहाथमेंलेनेत्रसों
लगावेदर्सनार्थ॥ प्रथम अष्टाक्षरकीमाला
॥ यहसरणमंत्रतेप्रभुकोदयाउपजे॥ यामंत्रतें
सगरेव्रजभक्तकोसरणसिधिभयो॥ तातेंजुग
लस्वरूपकीसरणसगरोव्रजहे॥ तातेंसरणमंत्र
हूमेंप्रभुश्रीस्वामिनीजीकीसरणहोतहे॥ अष्टाक्षरमेंप्र
भुकोस्वामिनीगतिहें॥ पंचाक्षरमेंस्वामिनीकोविरहसहां
प्रभुगतिहे॥ तातेंअष्टाक्षरमेंसखीकेभावमेंमिलिकेंप्र
भुसरणहोतहे॥ तातेंअष्टसखीनकेभावकीअष्टमाला
आवश्यकहीफेरिए॥ तथासमस्तव्रजभक्तअष्टसखि

जसोमिलिकें॥ जुगलस्वरूपकीसरणहोतहे॥ यहसंयोग
रसकोमंत्रहेतातें अष्टसखिनकेभावतें अष्ट आवश्य
॥ पंचाक्षरमंत्रमुख्यस्वामिनीजीवियोगसमयजप
तहे॥ तातें यामंत्रमेंश्रीनाहींहे॥ पंचाक्षरकोपांचमुख्य
अवस्वरूपपंचप्राणकीरक्षाकरतहे॥ तथापंचतत्वकी
रक्षाहोतहे॥ विरहकरिदेहप्राणआदिसबप्रभुरूपहे
जातहे॥ तातेंपांचआवश्यहें॥ गोमुखीश्रीस्वामिनीजी
कोमुख॥ नीतरमाला॥ १॥ सोरसना॥ मनिका॥ १०८॥ जो
रसंबंधीनाम श्रीसर्वोत्तमजीमें कहेहें सोई अष्टाक्षर
पंचाक्षरमेंहे सर्वोत्तममें श्री आचार्यजीके अंतरली
लाकेनामहे॥ अष्टाक्षरमें पंचाक्षरमें मूलजोनाके ना
महे॥ तातेंमनिका॥ १०८॥ एकएकनाम एकएकमनिकाकी
जीजामेंतन्मयहोइजातहे॥ गोमुखीमुखरूपहेतातेंय
विकेजपकरिए॥ तातेंपंचाक्षरकेमंत्रमेंमुख्यस्यामरंग
कीगोमुखीचहिए॥ विरहकरिकेप्रभुकेरूपकोंगाईहे॥
॥ अथवाजालपरी आपुकोरूपहेकेसरिकुंकुमल

गावतहैं॥ सुमेरु।१॥ समस्त भक्तके संगप्रभुजी बासकरतहैं॥
॥तहांभक्तपहुंचनेजोहमहींसोंजोबासकरतहैं॥ अपस
खंडखंडकीमर्यादासुमेरुसोंहै॥ तातेभगवदजीबासुम
१० ॥ मनिकावीचमेंसुमेरुचारोवारतें घेरिरहेहैं॥ ता
तेंसुमेरुकोलंघननकरे॥ उलंघनकरेलोजोबालतें बा
हरजायपरे॥ पवित्रापहरिएसोब्रह्मसंबंधको आ
ज्ञासर्या अपनेको जबभयो॥ सोसमयमें सुमिरन स्म
र्यो॥ मालासूतमेंपरोयके बांधे॥ काहेतें प्रभुको नामके
एकसूतकरह्योहैं॥ तथासगरेभक्तएकसूतके जुग
लस्वरूपकेचरणकमलतें बंधेहैं॥ ब्रह्म पठके मेंपु
षोत्तमकोब्रह्मकहतहैं सोब्रह्मके स्वरूप श्री
मनीजीकोरूपदोऊसोंड्रढबंधनकरह्योहै॥ एसेजो पु
रुषोत्तमसोंएकसे आठलीलासहितबसतएहैं॥ ज
पमेंबोलनेनांनाहीं॥ अपाष्टममें संयोगरसके अनुभ
व अर्थ जुगलरूप विराजेहैं लिलतामेंमरणहों पंचा
क्षरमें वियोगानुभव अर्थ एकांतमें जहां करूंतो

किकसुनेनाहीं देखेनाहीं॥ आसनपरजोमनउद्वेग
नहोइसोतत्कालहोइतो अपरसवस्त्र ओढकेकरे॥
॥ ऐसोजपएकहूदिनविनि आवे ताके नागबोंपार
नाहीं॥ अपतससोविरह अरहमारोकोईजाननो
सो॥ तातेंमूलमुद्रिके व्रजभक्तउतरदेतहैं नंनकोज
लकमेंरजगई॥ मालाकरसोधुवेनाहीं॥ जाघट वि
रहअरुवा अगिनपरपकमयोसुनाई॥ ताहीघटमेंन
दयहैप्रेमअमीव्हैराई॥ खासासोनिकुंजसंबंधी पु
षिपुरिवि॥ मर्यादानंदपशोदाश्रीवलदेवजी आदि॥
मर्यादापुषिसेवकसोव्रजके वडेवडे गोपसस्त्रधारी
सेवकतहुताकेवलमर्यादामुखरारूपखस्च व्रजमें
पुतनाआदिराधसमुक्तिके अधिकारी॥ सवामें विरो
धी॥ गाजरमूलातरबूजा प्याजमसूरकीदारलसोरा
प्रवाहीकवहूंउधारनाहीं॥ वर्षनीवत॥ सवआइस
कालमेंकहाहैं सोएकएकआयुकोमूल्यहरिलैजाई
आयुहरतिबेपुसा॥ इतिश्रुत॥ सवतलक्षंतुबर्षानि

जप त्रेतायामयुतं तथा द्वापरे॥ तु सहस्राणि कलौ वर्षे
३८ सतं स्मृतं॥१॥ सतजुगमें लाख वर्षकी आयु सो सत
मृत्य एक एक आयु हजार वर्षमें जोगवे त्रेतामें दस
हजारकी आयु तब सौ वर्ष करि जोगावे॥ द्वापरमें ह
जार वर्षकी आयु॥ तहां दस दस वर्ष करिके जोगा
वे॥ कलिमें सत वर्षकी तहां एक एक वर्ष करि जोगा
वै॥ कलिमें निश्चय नांही॥ थोरे वर्ष जीवे तो स्थूल
म काल करिके जोगवे॥ सूक्ष्म कालमें मृत्य होइ तो
फल करि जोगवे॥ सत मृत्य जोगवे बिना प्राण जा
इ॥ या प्रकार आईसु को काल ग्रहसत है तासे सत्ता
निकाले कालके ग्रासते छूटे॥ कालसंबंधनकरे॥
॥ अष्टम निकाले षट्गुण सहीत धर्मी …
संयोग वियोग दोऊ स्वरूप हृदयमें विराजे॥ तुलसी
दिव्य गंध है॥ सत सो परोई सुमरसो बांधे॥ प्रभु के च
रणरूप सुमरता सो एक सत दास ह्वै बंधे सब कार्य
सिद्धि होइ॥ तुलसीते अन्य संबंधन होइ॥ तथा सुद्धे

श्राष कदंब आदि परम भगवदी पहेंईनके संबंधते
भगवदी होई॥ प्रभु कृपा करे अधालसके जपेते आसु
रभाव निवृत्ति होई॥ श्रोर श्रवणकीर्त्तन अर्चनव
दन स्मरण पादसेवन दास्य सख्य सातभक्ति सिद्धि होइ
॥ दासन्य सख्य आत्मनिवेदन निवेदनमंत्रते सि
द्धि होइ॥ या प्रकार दोऊ मंत्रतें जो धामक्ति नईं पाछें
भगवद्सेवा प्रेमासक्ति जब व्यसन होइ॥ पीछें सर्वा
त्म भाव उपजे तब फलरूपा मानसी सिद्ध होइ॥ सेवा
के मुख्य मुर्त्ति वुधि निवृत्ति होइ जब प्रभुको साक्षा
त प्रभुरूप हृदयमें आवें तब प्रेम उपजे॥ सबको मूल
यह है॥ तहां कोई कहे अंतरजामी रूप भगवान भीत
र है तिनको स्मरण करे उपदेस लेनको कहा प्रयोजन
नहे॥ तहां कहत है बाहिर प्रकट स्वात्माव हिं …
विसहदि॥ सदैव सकलोव धोजासमें तिन चात्पथा
१॥ अन्तर्गो जो काष्ठमें अग्नि है परंतु काष्ठके दाहकरि
वेको सामर्थ्य नांही है॥ जब कोई मथके बाहर काढे त